Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 273 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, शुक्रवार 26 अप्रैल 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अपने आप पर विजय प्राप्त करना ही सबसे बड़ा विजय है।

To get victory over self is the greatest victory.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

गृहमंत्री अमित शाह आज बेमेतरा में चुनावी सभा को करेंगी संबोधित

बेमेतरा-रायपुर (आरएनएस)। दुर्ग लोकसभा सीट अंतर्गत शामिल

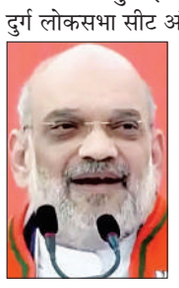

बेमेतरा जिले में 7 मई को मतदान होना है। इस लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा, कांग्रेस समेत अन्य पार्टी अपना प्रचार-प्रसार कर रहीं है। आने वाले 26 अप्रैल को बेमेतरा में भाजपा की ओर गृहमंत्री अमित शाह सभा को संबोधित करेंगे। दुर्ग लोकसभा सीट अंतर्गत शामिल बेमेतरा जिले में 7 मई को मतदान होना है। इस लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा, कांग्रेस समेत अन्य पार्टी अपना प्रचार-प्रसार कर रहीं है। आने वाले 26 अप्रैल को बेमेतरा में भाजपा की ओर गृहमंत्री अमित शाह सभा को संबोधित करेंगे। उनके संभावित कार्यक्रम को लेकर भाजपा की तैयारी शुरू हो गई है। यह कार्यक्रम बेमेतरा शहर के बेसिक स्कूल मैदान में होगा। इसे लेकर मंगलवार को भाजपा नेताओं ने प्रस्तावित सभा स्थल का निरीक्षण किया। बता दे कि बीते 2023 के विधानसभा चुनाव में भी अमित शाह ने जिले के साजा में सभा ली थी। अब लोकसभा चुनाव में बेमेतरा आने वाले है। बेमेतरा जिले में कुल तीन विधानसभा सीट है, जिसमें बेमेतरा, साजा व नवागढ़ शामिल है। जिले में कुल 7 लाख 69 हजार 502 मतदाता है।

लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान आज, छत्तीसगढ़ में 3 सीटों सहित 88 सीटों पर पड़ेंगे वोट

कुल 1206 प्रत्याशी चुनावी मैदान में भाग्य आजमा रहे हैं

नई दिल्ली (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में चुनाव में शुक्रवार को 12 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश की 88 सीटों पर वोट डाले जायेंगे और इसके लिये चुनाव आयोग ने मतदान केन्द्रों तक वोटिंग मशीनें पहुंचाने से लेकर सुरक्षा व्यवस्था समेत सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। मतदान सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक कराया जायेगा। इसके लिए दूरदराज के मतदान केन्द्रों पर मतदान कराने वाले अधिकारियों की टीमें मतदान सामग्री के साथ पहले ही रवाना कर दी गयी हैं।

निर्वाचन आयोग ने दिव्यांग और 80 वर्ष से अधिक उम्र के मतदाताओं के लिये घर से मतदान करने की सुविधा भी की है। तेज गर्मी को देखते हुए मतदान केन्द्रों पर पेयजल और छाया की व्यवस्था की जा रही है। पहले चरण में 19 अप्रैल को मतदान 66 प्रतिशत से कुछ अधिक था, जो 2019 के औसत मतदान की तुलना में तीन प्रतिशत कम रहा। जिला निर्वाचन अधिकारी मतदान में मतदाताओं की भागीदारी बढ़ाने के लिये फोन पर रिकार्ड की हुई अपील जारी करने के अलावा सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों से मतदान के महत्व को रेखांकित कर रहे हैं।

निर्वाचन आयोग के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दूसरे चरण में मध्य प्रदेश की बैतूल सीट पर भी चुनाव होना था, लेकिन बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के उम्मीदवार के निधन के कारण अब इस सीट पर चुनाव सात मई को तीसरे चरण में कराया जाएगा। 88 सीटों पर कुल 1206 प्रत्याशी चुनावी मैदान में भाग्य आजमा रहे हैं। इस चरण में केरल की 20, कर्नाटक की 14, राजस्थान की 13, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश की 8-8, मध्य प्रदेश की 6, असम और बिहार की 5-5, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल की 3-3 और जम्मू-कश्मीर, मणिपुर तथा त्रिपुरा की एक-एक सीट पर मतदान होगा। निर्वाचन आयोग के अनुसार इस चरण के लिये 89 सामान्य पर्यवेक्षक, 53 पुलिस पर्यवेक्षक और 109 व्यय पर्यवेक्षक तैनात किये गये हैं।

लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में राजनांदगांव, महासमुंद और कांकेर में आज होगा मतदान

52,84,938 मतदाता अपने मतों का करेंगे प्रयोग

रायपुर (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव 2024 के दूसरे चरण में राजनांदगांव, महासमुंद एवं कांकेर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के कुल तीन लोकसभा क्षेत्रों के 52,84,938 मतदाता अपने मतों का प्रयोग करेंगे। निर्वाचन सदन में आयोजित पत्रकारवार्ता में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी रीना बाबा साहेब कंगाले ने बताया कि कुल लोकसभा तीन के अंतर्गत क्रमांक 6 राजनांदगांव, 9 महासमुंद एवं 11 कांकेर में सुबह 7 बजे से दोपहर 3 बजे के मध्य मतदान प्रक्रिया संपन्न होगी। उक्त निर्वाचन क्षेत्रों में कुल मतदान केंद्रों की संख्या 6567 जिनमें दो सहायक मतदान केंद्र राजनांदगांव में 2330 महासमुंद 2147 एवं कांकेर में 2090 में मतदाता अपने मतों का प्रयोग करेंगे। द्वितीय चरण के तीन लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के अंतर्गत राजनांदगांव क्षेत्रों की संख्या 8 क्रमश: पंडरिया 71, कवर्धा 72, खैरागढ़ 73, डोंगरगढ़ 74, राजनांदगांव 75 डोंगरगांव 76, खुज्जी 77 एवं 78 मोहला मानपुर क्षेत्र सम्मिलित होंगे। इसी तरह महासमुंद लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत 39 सरायपाली, 40 बसना, 41 खल्लारी, 42 महासमुंद, 54 राजिम, 55 बिंद्रानवागढ़, 57कुरुद एवं धमतरी 78 क्षेत्र सम्मिलित होंगे। कांकेर लोकसभा के अंतर्गत 79 अंतागढ़, 80 भानुप्रतापपुर, 81 कांकेर, 82 केशकाल, 56 सिहावा, 59 संजारी बालोद, 60 डौंडी लोहारा एवं 61 गुंडरदेही क्षेत्र शामिल होंगे। 2019 के मुकाबले इस बार तीनों लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में मतदाताओं की संख्या में 7.69 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 2019 की चुनाव में कुल मतदाता 4907, 489 थी वह बढ़कर 538493 हो गई है।

द्वितीय चरण में तीनों लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत कुल 330 संगतवारी मतदान केंद्र बनाए गये है जिनमें 25 दिव्यांगजनों द्वारा संचालित मतदान केंद्र एवं 117 युवाओं द्वारा संचालित मतदान केंद्र बनाए गये हैं। 120 मतदान केंद्रों को आदर्श मतदान केंद्र बनाए गये हैं। चुनाव प्रचार 48 घंटे पूर्व बंद किया जा चुका है। श्रमिकों के लिए 26 अप्रेल को सवैतनिक अवकाश घोषित किया गया है। अनिवार्य सेवा श्रेणी में अधिसूचित 156 डाकपत्र प्राप्त हुए है। निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार रिटर्निंग अधिकारियों द्वारा तीनों लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान प्रक्रिया संपन्न करायी जाएगी। सुरक्षा के व्यापक प्रबंध किये गये हैं। आयोग द्वारा किसी भी प्रकार की शिकायत मिलने पर त्वरित कार्रवाई की जाएगी।

अपनी संपत्ति बचाने राजीव गांधी ने खत्म कर दिया 'इन्हैरिटेंस टैक्स' : नरेन्द्र मोदी

मुरैना (आरएनएस)। इन्हैरिटेंस टैक्स' (विरासत कर) से जुड़े मामले को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज लगातार दूसरे दिन कांग्रेस पर ताबड़तोड़ हमले बोले और कहा कि ये कर कांग्रेस सरकार के समय में पहले भी लागू था, लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से मिलने वाली संपत्ति को पाने के लिए उनके पुत्र और तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने इस कर को समाप्त कर दिया और अब अपना मामला निपटने के बाद कांग्रेस सत्ता पाने फिर वही कानून और कड़ाई से लागू करना चाहती है। मोदी मध्यप्रदेश के मुरैना में भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा भी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस कर संबंधित 'इंडियन ओवरसीज कांग्रेस' के निदेशक सैम पित्रोदा के सुझाव को लेकर आज फिर कांग्रेस को घेरा। उन्होंने कहा कि वे आज देश के सामने एक बहुत बड़ा तथ्य रखने जा रहे हैं, जिसे सभी ध्यान से सुनें। इसी क्रम में उन्होंने कहा कि देश की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जब नहीं रहीं, तो उनकी जो मिल्कियत थी, उनकी संतानों को मिलनी थी, लेकिन, पहले ऐसा कानून था कि इस प्रकार से मिलने वाली संपत्ति से एक हिस्सा सरकार ले लेती थी। ये कांग्रेस की सरकार ने कानून बनाया था। उन्होंने कहा कि श्रीमती गांधी के निधन के बाद चर्चा थी कि अब जब वे नहीं रही तो उनके बेटे राजीव गांधी को ये प्रॉपर्टी कैसे मिलेगी क्योंकि श्रीमती गांधी बेटे को संपत्ति मिलने की दौलत हासिल करने के बाद अब ये लोग सामान्य आदमी की विरासत, मेहनत की कमाई पर टैक्स लगा कर आधी संपत्ति लूटना चाहते हैं और इसलिए देश कह रहा है कि 'कांग्रेस की लूट, जिंदगी के साथ भी और जिंदगी के बाद भी'।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस के ये जो इरादे हैं, उससे आपकी रक्षा करने के लिए मोदी दीवार बन कर खड़ा है। कांग्रेस की ये गाली गलौच इसलिए हो रही है क्योंकि मोदी 56 इंच का सीना तान कर खड़ा है, लेकिन इनके मंसूबे सफल नहीं होंगे। ये मोदी की गारंटी है। मोदी ने कल भी मध्यप्रदेश के सागर और हरदा में अपने चुनावी सभा में इस मामले को लेकर कांग्रेस को जबर्दस्त तौर पर घेरा था। श्री मोदी ने कहा था कि दादा नाना अपने बच्चों के लिए जो संपत्ति बचाते हैं, कांग्रेस की अब उस पर भी नजर है। कांग्रेस को देश के पारिवारिक मूल्यों का भी सम्मान नहीं है। कांग्रेस के परामर्शकार पित्रोदा ने इस टैक्स का सुझाव देते हुए कहा था कि अमेरिका में इस प्रकार का टैक्स लागू है और भारत में भी इस पर बात होनी चाहिए।

दो लड़कों की फ्लॉप जोड़ी से विकास की उम्मीद नहीं : प्रधानमंत्री मोदी

शाहजहांपुर (आरएनएस)। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सपा और कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि दो लड़कों की जोड़ी जो कई बार फ्लॉप हो चुकी है, उससे विकास की कोई उम्मीद नहीं कर सकते हैं? हमारी सरकार के लिए युवा, गरीब, किसान और नारी शक्ति पहली प्राथमिकता है। हमने चार करोड़ गरीबों को पीएम आवास के तहत घर दिए हैं, जिनमें से अधिकांश महिलाओं के नाम पर बनवाए गए हैं। यही नहीं, हम तीन करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाएंगे। उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस की सबसे बड़ी नेता आर्तकियों के मरने पर आंसू बहा रही थी। ऐसे लोग आपको मंजूर हैं क्या? सपा वाले तो ऐसे थे कि जो आतंकी जेल में थे, उनको रिहा करवाने के लिए कानूनी रास्ते खोज रहे थे।

पीएम मोदी ने हमारे घोषणापत्र को सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश की : जयराम रमेश

नई दिल्ली (एएनआई)। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर कांग्रेस के घोषणापत्र को सांप्रदायिक कोण देने की कोशिश करने का आरोप लगाया। कांग्रेस नेता ने पीएम मोदी पर कुछ ऐसे मुद्दे उठाने का भी आरोप लगाया जो घोषणापत्र में नहीं हैं. बीजेपी मुश्किल में है. पीएम हैरान हैं. 19 अप्रैल से वह पूरे एजेंडे को अलग दिशा में ले जाने की कोशिश कर रहे हैं. उन्होंने हमारे घोषणापत्र को सांप्रदायिक एंगल देने की कोशिश की, जिसके बाद उन्होंने कुछ ऐसे मुद्दे उठाए जो सही नहीं हैं हमारे घोषणापत्र में... वह अपनी चुनावी रैलियों के दौरान हमारे घोषणापत्र का प्रचार कर रहे हैं, भले ही यह प्रचार गलत है, यह झूठ पर आधारित है, फिर भी, यह पहली बार है कि प्रधानमंत्री विपक्ष के घोषणापत्र का प्रचार कर रहे हैं। जयराम रमेश ने पीएम के इस दावे को चुनौती दी कि उनका घोषणापत्र धन पुनर्वितरण के बारे में बात करता है, उन्होंने कहा कि उनके 50 पन्नों के घोषणापत्र में एक भी शब्द ऐसा नहीं है जो धन पुनर्वितरण का संकेत देता हो। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री कहते हैं कि हमारा घोषणापत्र धन पुनर्वितरण की बात करता है। मैं उन्हें चुनौती देता हूं कि हमारे 50 पन्नों के घोषणापत्र में एक भी शब्द ऐसा नहीं है जो धन पुनर्वितरण का संकेत देता हो।

प्रधानमंत्री मोदी और राहुल गांधी के भाषणों पर सख्त हुआ चुनाव आयोग, भाजपा और कांग्रेस से जवाब तलब

नई दिल्ली (आरएनएस)। चुनाव आयोग ने आज कांग्रेस और भाजपा अध्यक्ष से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राहुल गांधी के बयान पर जवाब मांगते हुए नोटिस जारी किया है। ये नोटिस मोदी और राहुल के भाषणों के खिलाफ की गई शिकायतों के आधार पर जारी किया गया। इन शिकायतों में आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप लगाया गया है।

चुनाव आयोग ने जनप्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 77 के तहत दोनों पार्टियों के अध्यक्षों को जवाब देने को कहा है। बता दें कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पीएम मोदी और बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने राहुल गांधी पर आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप लगाया था। आयोग ने दोनों पार्टियों के अध्यक्ष से इस मामले में 29 अप्रैल सुबह 11 बजे तक जवाब मांगा है। राहुल गांधी द्वारा आदर्श आचार संहिता का कथित उल्लंघन किए जाने का संज्ञान लिया गया है। चुनाव आयोग ने कहा कि राजनीतिक दलों को अपने उम्मीदवारों, स्टार प्रचारकों के आचरण की प्राथमिक और बढ़ती जिम्मेदारी लेनी होगी।राजस्थान के बांसवाड़ा में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिए गए भाषण को लेकर कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों की शिकायत पर निर्वाचन आयोग ने भाजपा चीफ जेपी नड्डा से जवाब मांगा है।

वकीलों, पक्षकारों को व्यक्तिगत रूप से मैसेज व्हाट्सएप पर मिलेंगे : सीजेआई

नई दिल्ली (आरएनएस)। भारत के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट की आईसीटी (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) सेवाओं के साथ व्हाट्सएप मैसेजिंग सेवाओं के एकीकरण का ऐलान किया। सीजेआई चंद्रचूड़ ने अदालत में बार के सदस्यों को बताया, अब वादियों, पक्षकारों और एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड (एओआर) को ई-फाइलिंग, रजिस्ट्री द्वारा उठाई गई आपत्तियों, कॉज लिस्ट एवं आदेशों तथा निर्णयों को अपलोड करने के संबंध में ऑटोमेटिक मैसेज मिलेंगे। उन्होंने कहा कि व्हाट्सएप ने एक पावरफुल कम्युनिकेशन टूल की भूमिका निभाई है। इस छोटी पहल का बड़ा प्रभाव होगा। कॉज लिस्ट को न्यायाधीशों को व्हाट्सएप पर भी भेजा जाएगा। इस तरह की डिजिटल पहल से न केवल कागज की बचत होगी बल्कि हमारे ग्रह पृथ्वी को भी फायदा होगा। वहीं सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि व्हाट्सएप मैसेजिंग सुविधा का एकीकरण सुप्रीम कोर्ट द्वारा उठाया गया एक और क्रांतिकारी कदम है। उन्होंने इसके लिए आभार जताया।

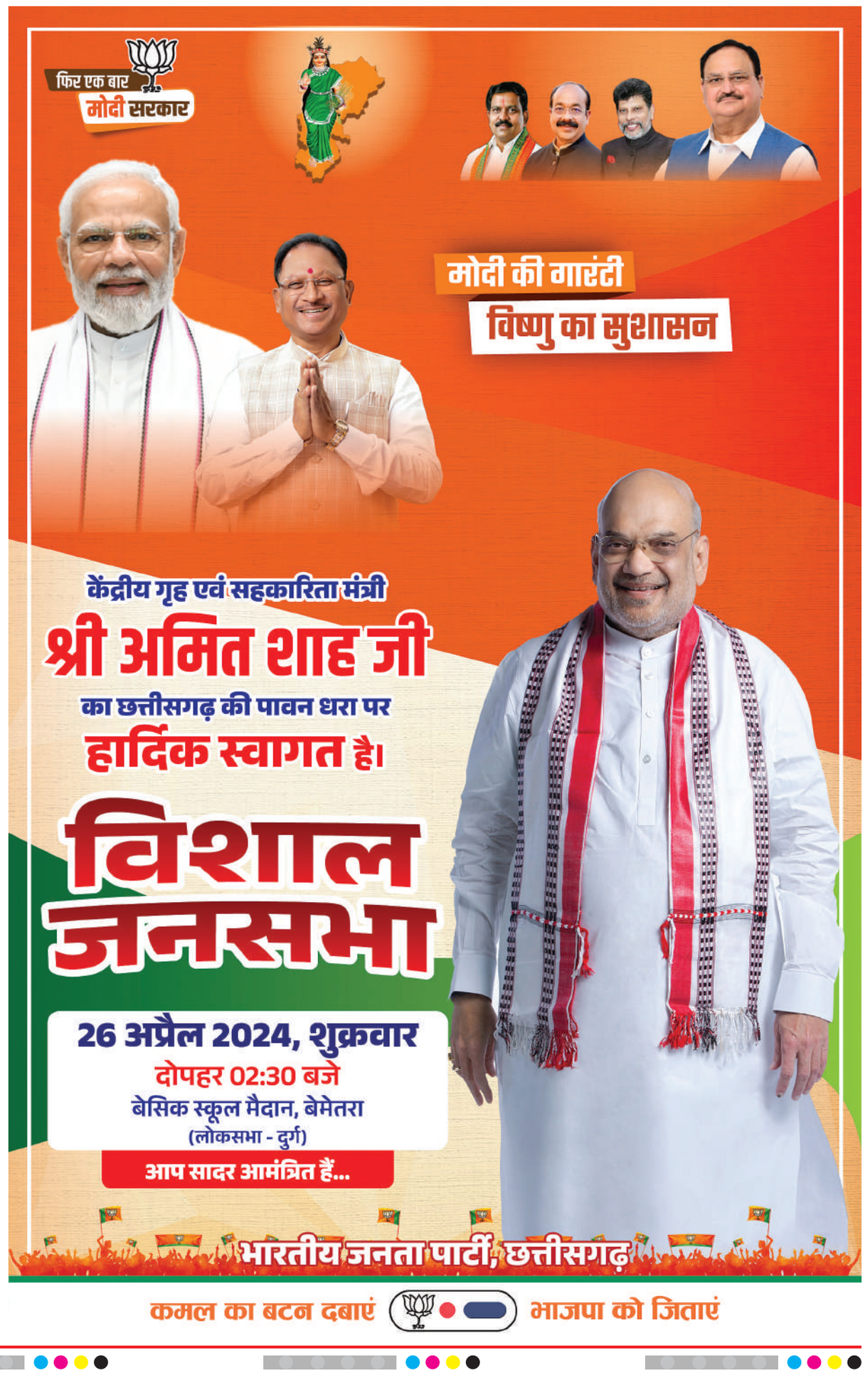

रायपुर रेल मंडल में ट्रेनों के सुरक्षित परिचालन को लेकर मल्टी फंक्शन कॉप्लेक्स/दुर्ग स्टेशन में किया गया संरक्षा सेमिनार का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। दिनांक 25 अप्रैल 2024 को दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल के संरक्षा विभाग के द्वारा ट्रेनों के सुरक्षित परिचालन हेतु परिचालन, विद्युत परिचालन, यांत्रिक, सिग्नल एवं दूरसंचार तथा इंजीनियरिंग विभाग के कर्मचारियों के साथ मल्टी फंक्शन कॉप्लेक्स/दुर्ग स्टेशन में संरक्षा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें निम्न बिंदुओं पर चर्चा की गई-

स्पैड से बचाव के लिए बरती जानेवाली सावधानियां एवं ब्लॉक टिकट (TJ-602) में लाइट इंजन/ ट्रेन का कार्य करना, शंटिंग के दौरान बरती जाने वाली सावधानियां एवं गाड़ियों का रोल डाउन से बचाव, ट्रेन, इंजन एवं पावर कर में आग से बचाव, इंजीनियरिंग विभाग के द्वारा बरती जाने वाली ग्रीष्मकालीन सावधानियां, सिग्नल एवं पॉइंट की विफलता के दौरान सिग्नल तथा परिचालन कर्मचारियों के द्वारा बरती जाने वाली सावधानियां, कोचिंग ट्रेन में ब्रेक वाइडिंग का कारण एवं निवारण, हाल ही में हुई दुर्घटनाओं का विश्लेषण, प्राथमिक उपचार पेटी के उपयोग का प्रदर्शन,तथा अग्निशमन यंत्र का उपयोग एवं प्रदर्शन।

इस संरक्षा सेमिनार में श्री प्रवीण कुमार, सहायक मंडल संरक्षा अधिकारी/ रायपुर, श्री आर के सोनी, सहायक मंडल विद्युत अभियंता/ परिचालन/भिलाई तथा त्रिनाथ मोहंती, संरक्षा सलाहकार/विद्युत, श्री संजीव कुमार सिंह, संरक्षा सलाहकार/ इंजीनियरिंग, श्री शंकर लाल पटेल, संरक्षा सलाहकार/ सिग्नल एवं दूरसंचार तथा श्री भूपेश साहू, संरक्षा सलाहकार/यांत्रिक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संरक्षा संगठन/रायपुर मंडल के द्वारा प्रत्येक माह में 02 संरक्षा संगोष्ठी का आयोजन रायपुर मंडल के विभिन्न स्टेशनों में किया जाता है, जिससे कर्मचारियों में कार्य करने के दौरान संरक्षा के प्रति जागरुकता लाई जा सके। उक्त संरक्षा संगोष्ठी में संरक्षा सलाहकार, सुपरवाइजर, एवं फील्ड कर्मचारियों को मिलाकर कुल 83 लोगों ने भाग लिया।

मतदान की अलख जगाने निकाली गई स्वीप सीटी रैली

कलेक्टर केएल चौहान के नेतृत्व में डेढ़ किमी तक रैली में बजाई गई सीटी, मतदाता जागरूकता के लिए जिला प्रशासन की अनूठी पहल

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन में शतप्रतिशत मतदान के लिए स्वीप अन्तर्गत जिले में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में गुरुवार को भटापारा नगर में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री के. एल. चौहान की अगुवाई में मतदाताओ में मतदान का अलख जगाने के लिए स्वीप सीटी रैली निकाली गई। कलेक्टर श्री चौहान ने भाटापारा स्थित विश्राम गृह से हरी झंडी दिखाकर और सीटी बजाकर रैली का शुभारंभ प किया। रैली विश्राम गृह से शुरू होकर करीब डेढ़ किलोमीटर दूर सिटी सेंटर तक सीटी बजाते हुए सम्पन्न हुई। रैली में अधिकारी, कर्मचारी, स्कॉउट गाईड के बच्चे, स्कूली छात्र छात्रएं, समूह की महिलाएं एवं नागरिकगण बड़ी संख्या में शामिल हुए। कलेक्टर श्री चौहान ने सिटी सेंटर में उपस्थित सभी लोगों को मतदान की शपथ दिलाई।

इस अवसर पर कलेक्टर श्री चौहान ने कहा कि मतदाता जागरूकता के लिए नवाचार का प्रयोग उत्साहित करता है। भाटापारा में नवाचार का प्रयोग करते हुए स्वीप सीटी रैली का आयोजन किया गया। नए तरह का कार्यक्रम होने से लोगों में उत्साह देखने को मिला। उन्होंने कहा कि स्वीप सीटी रैली एक प्रकार से सपोर्ट की थींम पर आधारित है जिस प्रकार से खेल की शुरुआत सीटी से होती है उसी प्रकार मतदान की शुरुआत को उत्साहजनक बनाने के लिए स्वीप सीटी रैली निकाली गई। मतदान हमारे लिए एक महापर्व है, स्पोर्ट्स की तरह उत्साह रहता है। इस कार्यक्रम के जरिए मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करना और उनमें मतदान के प्रति रूझान पैदा करना है। उन्होंने कहा कि 7 मई को शतप्रतिशत मतदान के लिए निरंतर मतदाता जागरूकता की गतिविधयां स्थानीय एवं अपने स्तर पर जारी रखें एनयूएलएम, स्कॉउट गाइड, शिक्षक इसमे अवश्य शामिल हों। उन्होंने कहा कि मतदान केंद्र में मतदाताओ की सुविधा का भी विशेष ध्यान रखा जा रहा है। बुजुर्ग, दिव्यांग व गर्भवती मतदाओं के लिए मतदान केंद्र में वेटिंग हाल भी बनाये जाएंगे। छाया, पानी, टेंट आदि की व्यवस्था रहेगी।

इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत सुश्री दिव्या अग्रवाल, एसडीएम नितिन तिवारी, जिला शिक्ष अधिकारी हिमांशु भारतीय, तहसीलदार चित्ररेखा चंद्रवंशी सहित अन्य अधिकारी, कर्मचारी, छात्र, छात्रएं, समूह की महिलाये एवं नागरिकगण उपस्थित थे।

मतदाता फोटो पहचान पत्र के अतिरिक्त 12 वैकल्पिक फोटोयुक्त दस्तावेज दिखाकर भी कर सकेंगे मतदान

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत भारत निर्वाचन आयोग की ओर से सभी मतदाताओं को निर्वाचक फोटो पहचान पत्र जारी किए गए हैं। आयोग सभी मतदाताओं से अपेक्षा करता है कि वे मतदान स्थल पर अपना मत देने से पहले अपनी पहचान सुनिश्चित करने के लिए आयोग की ओर से जारी निर्वाचक फोटो पहचान पत्र दिखाएंगे।यदि कोई निर्वाचक फोटो पहचान पत्र नहीं दिखा पाता है तो भारत निर्वाचन आयोग द्वारा उनके लिए 12 वैकल्पिक दस्तावेज भी अनुमत किए गए है।

ऐसे निर्वाचक जो अपना निर्वाचक फोटो पहचान पत्र प्रस्तुत नहीं कर पाते है, उन्हें अपनी पहचान स्थापित करने के लिए 12 वैकल्पिक फोटो पहचान दस्तावेजों में से कोई एक प्रस्तुत करना होगा। इसमें आधार कार्ड, मनरेगा जाब कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, भारतीय पासपोर्ट, फोटोयुक्त पेंशन दस्तावेज एवं केंद्र सरकार, राज्य सरकार, लोक उपक्रम, पब्लिक लिमिटेड कंपनियों द्वारा अपने कर्मचारियों को जारी किए गए फोटोयुक्त सेवा पहचान पत्र, बैंकों व डाकघरों द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक, एनपीआर के अंतर्गत आरजीआई द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड, श्रम मंत्रालय की योजना के अंतर्गत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड एवं सांसदों, विधायकों, विधान परिषद सदस्यों को जारी किए गए सरकारी पहचान पत्र और भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा दिव्यांगजनों को जारी यूनिक डिसएबिलिटी आईडी (यूडीआईडी) कार्ड शामिल है। मतदाता इनमें से कोई भी दस्तावेज प्रस्तुत कर मतदान कर सकेंगे। प्रवासी निर्वाचकों को जो अपने पासपोर्ट में विवरणों के आधार पर निर्वाचक नामावालियों में पंजीकृत है, मतदान केंद्र में केवल उनके मूल पासपोर्ट (तथा अन्य कोई पहचान दस्तावेज नहीं) के आधार पर ही पहचाना जाएगा।

वेदांता एल्युमीनियम ने 'ऑटोएज' कॉन्क्लेव आयोजित कर ऑटो उद्योग के लिए एल्युमीनियम रेंज पेश किया

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। वेदांता एल्युमीनियम, भारत के सबसे बड़े एल्युमीनियम उत्पादक ने नई दिल्ली में ऑटोमोटिव सेक्टर के लिए 'ऑटोएज 2024' एक इंडस्ट्री कन्लेव का आयोजन किया। आधुनिक परिवहन में एल्युमीनियम का विभिन्न रूपों में बुनियादी महत्व है। यह ऑटोमोटिव के उत्पादन में एक महत्वपूर्ण कच्चा माल है। इस अवसर पर इस सेक्टर के भावी रोडमैप और इसके अंदर बड़े बदलाव में एल्यूमीनियम की भूमिका पर विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में कई सत्र आयोजित किए गए। यह प्रतिभागियों के लिए सहयोग के नए क्षेत्रों को जानने का भी बड़ा अवसर था। टॉप ऑटोमोटिव वाहन निर्माताओं और अनिवार्य कम्पोनेंट निर्माताओं ने इसमें भाग लिया।

कम्पनी ने उद्योग की जरूरतों के अनुसार कई उच्च गुणवत्ता के समाधान दिए

एल्युमीनियम हल्के वजन का धातु है जिसमें कई विशिष्ट गुण हैं जैसे अधिक कम वजन में अधिक मजबूत, उत्कृष्ट विद्युत चालक, जंग से बचने और पुनर्चक्रण की क्षमता शामिल है। इन गुणों की वजह से यह तेजी से बढ़ते ऑटोमोटिव सेक्टर के कई उपयोगों के लिए चुना जाता है। इस सेक्टर से वित्त वर्ष 2031 तक भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 15 प्रतिशत योगदान की उम्मीद है। आंतरिक दहन (आईसी) इंजन वाले एक वाहन में औसत लगभग 180 किलोग्राम एल्यूमीनियम होता है जबकि एक इलेक्ट्रिक वाहन में लगभग 260 किलोग्राम एल्यूमीनियम लगता है।

आयोजन के बारे में वेदांता एल्युमीनियम के सीईओ श्री जॉन स्लेवेन ने कहा कि हम ऑटोमोटिव उद्योग के हमारे ग्राहकों को एक साथ कई लाभ देते हैं। विश्व स्तरीय विशेषज्ञता, अत्याधुनिक तकनीक, उनके अनुकूल एलॉय, व्यापार करने में आसानी, भरोसेमंद आपूर्ति श्रृंखला और सबसे महत्वपूर्ण व्यवसाय को सस्टेनेबल बनाने की प्रतिबद्धता। इसके साथ-साथ इनोवेटिव उत्पादों के विकास, अत्याधुनिक तकनीक और स्थानीयकरण के बल पर वे भारतीय ऑटोमोटिव सेक्टर को वैश्विक कम्पनियों से बराबरी की प्रतिस्पर्धा करने का अवसर देते हैं।

यूनो मिंडा के सीनियर जनरल लीड -कॉर्पोरेट मटेरियल्स के श्री गौरव वत्स ने कहा कि वेदांता एल्युमीनियम ने बताया कि ऑटोमोटिव सेक्टर किस तरह विकास के नए दौर के लिए तैयार है। इस बदलाव का अधिक से अधिक लाभ लेने में एल्युमीनियम कई तरीकों से योगदान दे सकता है। परस्पर सहयोग से किए गए प्रयासों से हमेशा बेहतर समाधान मिलते हैं। इसलिए हम वेदांता एल्युमीनियम से हमारी सफल साझेदारी आगे ले जाने के लिए उत्साहित हैं। इससे इनोवेशन और व्यावसायिक विकास की संभावना साकार होगी।

वेदांता ने ऑटोमोटिव सेक्टर में इनोवेशन की अहमियत समझते हुए खास इस उद्योग के लिए कई उच्च गुणवत्ता के उत्पाद पेश किए हैं। इनमें सिलेंडर हेड और एलाय व्हील के लिए विशिष्ट प्राथमिक फाउंड्री एलॉय (पीएफए) और क्रैश-प्रतिरोधी एक्सट्रूजन के लिए बिलेट्स, जो जोरदार टक्कर रोकने वाले कार्यों के लिए जरूरी हैं। कंपनी विभिन्न ऑटोमोटिव उपयोगों के लिए सिल्लियां, रोल्ड प्रोडक्ट और वायर रॉड भी तैयार करती है। ये संयुक्त राज्य अमेरिका, स्पेन और इटली सहित अन्य देशों से आई विश्वस्तरीय टेक्नोलॉजी से तैयार किए जाते हैं। ये उच्च स्तरीय उपयोगों के लिए 60 से अधिक देश के ग्राहकों को निर्यात भी किए जाते हैं। यह वेदांता के उत्पादन की गुणवत्ता और बढ़ती मांग का प्रमाण है।

मलेरिया प्रभावित कसडोल में विशेष जागरूकता कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। कलेक्टर के.एल.चौहान के निर्देश पर इस वर्ष 25 अप्रैल को विश्व मलेरिया दिवस पूरे जिले में मनाया गया। इस बाबत सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों एवं आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में आम जन को मलेरिया रोग के प्रति रैली, परिचर्चा के माध्यम से जागरूक करते हुए रोग से बचाव का संदेश दिया गया।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./4465/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 4465
वार्ड का नाम- 61 - श्यामाप्रसाद मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 61 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR663R0913D** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **KAMAL NARAYAN SONKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ARUN KUMAR SONKAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BANITA PRADHAN** पिता/पति श्री/श्रीमती **TEJKUMAR PRADHAN** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री रमेश कुमार जायसवाल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि अटल आवास योजनान्तर्गत **कुरा धरसीवा,** रायपुर में स्थित **अटल आवास भवन क्रं.-49, कुमारी शाहीना बेगम पिता श्री नवाब खान,** को इस कार्यालय के आबंटन आदेश क्रं.- **4608** दिनांक **01.11.2008** के माध्यम से स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर अपने पक्ष में दिनांक **05.04.2010** को लीजडीड निष्पादित होने के उपरांत आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **कुमारी शाहीना बेगम पिता श्री नवाब खान,** निवासी- बजरंग मंदिर के पास, मौदहापारा, रायपुर, तह. व जिला- रायपुर (छ.ग.) के द्वारा आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा, शपथ पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत कर उक्त फ्लैट को क्रेता **श्रीमती पार्वती बाई पटेल पति श्री माखन लाल पटेल,** वर्तमान पता- दुर्गा नगर, बीरगांव, तह. व जिला- रायपुर (छ.ग.) को विक्रय करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के **विक्रय के संबंध में** किसी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर
email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा दीनदयाल उपाध्याय नगर कॉलोनी, **डंगनिया,** रायपुर में निर्मित **एम.आई.जी.** योजना के अंतर्गत भवनों में से भवन क्र.- **एम.आई.जी.-746 श्री महेश कुमार श्रीवास्तव पिता श्री दुर्गा प्रसाद श्रीवास्तव** को भाड़ाक्रय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा दिनांक **12.02.2004** को सेलडीड निष्पादित कर लिया गया है।

आबंटी उक्त भवन के दान हेतु दिनांक **02.03.2024** को नोटरी द्वारा निष्पादित दान विलेख (पारिवारिक- पिता-पुत्र, बिना प्रतिफल के) की छायाप्रति प्रस्तुत कर उक्त भवन **श्री आशीष श्रीवास्तव पिता श्री महेश श्रीवास्तव** के नाम से दान करने के लिए **दान अनुमति** की मांग की है।

अत: किसी व्यक्ति, शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/ भवन के दान के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /10893/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 24-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10893
वार्ड का नाम- 1 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 1 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801O00211** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHYAMA DEVI BHARDWAJ** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PAWAN BHARDWAJ** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SUKHWANT SINGH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **PARGAT SINGH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री अरूण ध्रुव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./9792/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 18-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 9792
वार्ड का नाम-16 - वीर शिवाजी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107F00140** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **ISHWAR PRASAD DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANSUKH LAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BALKISHAN SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JHUMUK SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./10151/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 23-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10151
वार्ड का नाम-18 - बालगंगाधर तिलक वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 18 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR110C00279** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **V.B. GAJBHIYE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BISAN GAJBHIYE** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **NALINI GAJBHIYE** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE BRIJ LAL GAJBHIYE** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ ..../ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./10877/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 24-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10877
वार्ड का नाम- 65 - महामाया मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 65 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR561A00114** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **ARUNA DEWANGAN W/O LATE NILESH KUMAR DEWANGAN, KU. SUHANI, KU. ANSHIKA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE NILESH KUMAR DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **DEWASHRI PANSARI** पिता/पति श्री/श्रीमती **D/O RAMKRISHNA PANSARI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./10886/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 24-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10886
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी- आई.डी.-**RPR652F0112B** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAHMAT ALI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JALALUDDIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ANITA SONI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O RISHI LAL SONI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./10860/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 24-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10860
वार्ड का नाम- 36- हवलदार अब्दूल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 36 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR436K00254** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **DILSHAH BEGAM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MO. KADIR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती अफरोज बेगम** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पति श्री अब्दुल शाहिद खान** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के.डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./9894/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 16-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 9894
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR331I00045** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SMT. GUNMALA JAIN** पिता/पति श्री/श्रीमती **LATE ANOOP CHAND JAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **KIRAN MUNTO** पिता/पति श्री/श्रीमती **RAJKUMAR MUNOT** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **शपथ पत्र, हॉउसिंग बोर्ड आदेश एवं मृत्यु प्रमाण पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10709/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 22-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10709
वार्ड का नाम-30- शंकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 30 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR332A00027** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SURENDRA KELA** पिता/पति श्री/श्रीमती **DHANIRAM KELA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MANOJ KUMAR KEDIA** पिता/पति श्री/श्रीमती **GANPAT LAL KEDIA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10665/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 16-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10665
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227S00264** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BESTWAY DISTRIBUTION PVT. LTD. THROUGH DIRECTOR- S.K. JAIN** पिता/पति श्री/श्रीमती **SATYANARAYAN JAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BABU LAL AGRAWAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **TEKCHAND AGRAWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10743/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10743
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मीबाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227R00482** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VIVEK SHARMA** पिता/पति श्री/श्रीमती **BHIM SINGH SHARMA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती विमलेश सिंह** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति- श्री एदवीर सिंह** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10744/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10744
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227F00046** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MO. USMAN S/O ABDUL GANI, MO. GULAM YASIM RAZAVI S/O MO. USMAN** पिता/पति श्री/श्रीमती **.........** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **मोहम्मद गुलाम यासीन रजवी** पिता/पति श्री/श्रीमती **पिता- मोहम्मद उस्मान** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10272/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10272
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227M0175A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DINESH AGRAWAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **BHAGWATI PRASAD** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्री अफताब आलम- पिता मोहम्मद शानौलाह** पिता/पति श्री/श्रीमती **2. श्रीमती शगुफता फातमा- पति मोहम्मद आफताब आलम** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./10902/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10902
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227S00785** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DEEPAK KUMAR MISHRA** पिता/पति श्री/श्रीमती **RAVINDRA NATH MISHRA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SARITA AGRAWAL** पिता/पति श्री/श्रीमती **VISHWANATH AGRAWAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीति सिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./10775/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 25-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 10775
वार्ड का नाम- 60 - चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652F01118** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MS. SHARMA CONS PARTNER, SAMI AHMAD S/O LATE. ABU MOHAMMAD, RAUKEYA PARVIN W/O MO. SAMI AHMED, ASGAR ALI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MO. AHMED** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **AKSHAY KUMAR NAYAK** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O NAKUL PRASAD NAYAK** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (6)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शुक्रवार 26 अप्रैल 2024

महिलाएं किसी से कम नहीं है, निर्वाचन में भागीदारी गर्व की बात : प्रेक्षक

प्रेक्षक प्रेमसिंह मीणा और कलेक्टर अजीत वसंत ने महिलाओं का किया उत्साहवर्धन

कोरबा विधानसभा में महिलाओं द्वारा सम्पन्न कराई जाएगी मतदान की प्रक्रिया

कोरबा(विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत महिला मतदान दलों को स्वामी आत्मानन्द विद्यालय विद्युत गृह उच्चतर विद्यालय क्रमांक 1 में प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। आज प्रशिक्षण स्थल पर अलग-अलग कक्ष में कोरबा लोकसभा के सामान्य प्रेक्षक श्री प्रेमसिंह मीणा और कलेक्टर श्री अजीत वसंत पहुँचे। उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त कर रही महिलाओं को लोकसभा निर्वाचन अंतर्गत दायित्व को गंभीरता से करने के लिए मास्टर्स ट्रेनर्स द्वारा दी जा रही महत्वपूर्ण जानकारियों को भलीभांति समझने और समझ नहीं आने पर बार-बार सवाल कर शंका का समाधान करने कहा। प्रेक्षक श्री मीणा ने कहा कि ईवीएम का बेहतर संचालन के लिए हैंड्सऑन आवश्यक है। उन्होंने कोरबा लोकसभा अंतर्गत विधानसभा कोरबा में मतदान की जिम्मेदारी महिलाओं के हाथों सम्पन्न कराए जाने की इस पहल की सराहना करते हुए प्रशिक्षण प्राप्त कर रही महिलाओं से कहा कि निर्वाचन कार्य में आपकी भागीदारी गर्व का विषय है। आप अपने आपको कम न आंके, आज महिलाएं बहुत आगे बढ़ रही है। निर्वाचन कार्य में आपकी भूमिका महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देगी और अन्य महिलाओं को मतदान के लिए भी प्रेरित करेगी। कलेक्टर श्री वसंत ने महिलाओं का उत्साहवर्धन किया और कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए मतदान करना जितना महत्वपूर्ण है,उतना ही महत्वपूर्ण मतदान के कार्यों को बिना किसी गलती के संपन्न कराना भी है। कलेक्टर ने पीठासीन अधिकारी से लेकर मतदान दल के अधिकारी एक,दो और तीन को आपस मे समन्वय बनाकर निर्वाचन के कार्य को गाइडलाइंस के अनुरूप चरणबद्ध तरीके से सम्पादित करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने प्रशिक्षण प्राप्त कर रही महिलाओं को यह भी बताया कि इस बार अभ्यर्थियों की संख्या ज्यादा है, इसलिए दो बैलेट यूनिट लगाए जाएंगे। मतदान की पूरी प्रक्रिया वैसी ही संचालित होगी जैसे एक बैलेट यूनिट में होती है। दो बैलेट यूनिट लगने से मतदान प्रोसेस में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होगा। प्रेक्षक श्री मीणा ने भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशानुसार निष्पक्ष और पारदर्शी निर्वाचन कोरबा जिले में सम्पन्न कराने की बात कही। इस दौरान जिला पंचायत सीईओ श्री संबित मिश्रा, एसडीएम श्री श्रीकांत वर्मा आदि उपस्थित थे। गौरतलब है कि लोकसभा निर्वाचन 2024 अंतर्गत निर्वाचन की प्रक्रिया में इस बार कोरबा विधानसभा क्षेत्र के 249 मतदान केंद्रों में पहली बार पीठासीन अधिकारी से लेकर अन्य मतदान कर्मचारियों के रूप में महिलाएं होंगी।

असिस्टैंड मैनेजर बता कर रहा था शादी, पोल खुलने पर दुल्हे की जमकर पिटाई

दूल्हे को पहनाई जूते की माला, पुलिस ने लिया हिरासत में

कोरबा(विश्व परिवार)। अपने आपको असिस्टेंट मैनेजर बता कर शादी करने के लिए बारात लेकर पहुंचे दुल्हा को इस बात का आभास भी नहीं था कि उसकी पोल खुल जाएगी। वधु पक्ष वालों ने दूल्हे को जूते की माला पहना कर न केवल जमकर खातिरदारी की, बल्कि पुलिस को सौंप दिया। मामले में पुलिस आगे कार्रवाई कर रही है। घटना कोतवाली अंतर्गत मंगलवार को हुई। बताया जा रहा है कि क्षेत्र में निवासरत एक परिवार के यहां पुत्री का विवाह दादूराम नामक व्यक्ति से तय किया था। विवाह के पहले दादूराम ने स्वयं के बारे में जानकारी दी थी कि वह गुजरात के वडोदरा में सयाजी होटल का असिस्टेंट मैनेजर है। पूरी सच्चाई जाने बिना वधु पक्ष ने विवाह की सभी तैयारी कर ली थी और विवाह संपन्न की प्रक्रिया भी शुरू हो गई थी। इसी दौरान वधु पक्ष के व्हाट्सएप नंबर पर गुजरात से आई जानकारी ने उन्हें परेशान कर दिया कि दूल्हा दादुलाल असिस्टेंट मैनेजर नहीं बल्कि होटल में बेटर है और उसका संबंध वहां किसी युवती से भी है। बस इतना पता चलने के बाद महिलाओं समेत आसपास के लोगों ने दादूलाल से पूरी जानकारी ली। सच्चाई सामने आने पर लोगों में नाराजगी बढ़ गई और उन्होंने दादूलाल के साथ मारपीट की। घटना की जानकारी मिलते ही कोतवाल मोतीलाल पटेल सदल बल पहुंचे और दूल्हे को हिरासत में लिया, पर घटना से नाराज लोगों ने दूल्हे को जूते की माला पहना कर पुन: जमकर पिटाई की। इसे लेकर भी लोगों के साथ पुलिस की जमकर नोंक- झोंक हुई। पुलिस ने किसी तरह हस्तक्षेप कर लोगों को शांत कराया और दादूलाल को अपने साथ लेकर कोतवाली चली गई। दादुलाल का इस संबंध में कहना है कि प्रेम संबंध वाली बात गलत है। उसे फंसाने के लिए लड़की झूठ बोल रही है। दूल्हे की पिटाई की इस घटना को लेकर क्षेत्र में चर्चा व्याप्त है। पुलिस का कहना है कि पूछताछ व जांच के बाद वास्तविक जानकारी छिपा कर विवाह करने की स्थिति में दादूलाल के ऊपर अपराध दर्ज किया जा सकता है।

छातीबहार के पहाड़ी कोरवाओं को गर्मी में भी मिलता है पर्याप्त पानी

हैंडपंप लगने से नहीं होती पेयजल की संकट

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिले में विशेष पिछड़ी जनजाति पहाड़ी कोरवा यहाँ की पहचान है। वनांचल में रहने वाले इन परिवारों को पेयजल के लिए जूझना न पड़े, इसके लिए लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा इनके निवास स्थान परिसर में हैंडपंप स्थापित किए गए हैं। कोरबा ब्लॉक के ग्राम छातीबहार में भी पहाड़ी कोरवाओं को पानी उपलब्धता के लिए दो हैंडपंप लगाए गए हैं, जहाँ इन्हें पानी की उपलब्धता निरंतर होती रहती है। ग्राम छातीबहार में 7 घर ही है, जिसमे 14 पहाड़ी कोरवा परिवार निवास करते हैं। वनांचल में रहने वाले इन परिवारों के लिए पीएचई द्वारा 2 हैंडपंप लगाए गए हैं। पीएचई के कार्यपालन अभियंता श्री ए. के. बच्चन ने बताया कि ग्राम छातीबहार में पहले से दो हैंडपंप स्थापित है। यहाँ पानी की कोई समस्या नहीं है। गर्मी के दिनों में भी हैंडपंप से पानी निकलता है और आसपास के पहाड़ी कोरवा पेयजल एवं दैनिक आवश्यकताओं के लिए हैंडपंप का पानी उपयोग करते हैं। ग्राम छातीबहार से ही कुछ दूर नदी भी है, इस छोटी नदी में नहाने एवं कपड़ा इत्यादि धोने के लिए कुछ परिवार आते हैं। ग्राम छातीबहार में पानी की कोई समस्या नहीं है। जिले के कलेक्टर श्री अजीत वसंत द्वारा भी पीएचई के अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि सभी क्षेत्रों में पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने जरूरी कदम उठाए जाएं।

ग्राम पंचायतों में मतदाता जागरूकता के लिए स्वीप की गतिविधियां निरंतर जारी

सेजेस स्कूल लाफा में शत-प्रतिशत मतदान की दिलाई गई शपथ

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के निर्देशन एवं स्वीप नोडल अधिकारी श्री संबित मिश्रा के मार्गदर्शन में लोकसभा निर्वाचन 2024 के दौरान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में युवा, पुरूष, महिलाओं द्वारा मतदान के प्रति जागरूक करने हेतु रैली, दीवारों पर नारा लेखन तथा स्कूलों छात्र-छात्राओं द्वारा निबंध, भाषण, मेहंदी प्रतियोगिता, पोस्टर निर्माण जैसे अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से शत-प्रतिशत मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में जनपद पंचायत पाली के ग्राम पंचायत मुनगाडीह में ग्रामीण महिलाओं के द्वारा पोस्टर बनाकर शत-प्रतिशत मतदान करने का संदेश देते हुए गांव में जागरूकता रैली निकाली गई। ग्राम पंचायत चैतमा के आंगनबाड़ी केंद्र में महिलाओं के द्वारा रंगोली बनाकर मतदान के लिए प्रेरित किया। महिलाओं ने मतदाता जागरूकता संबंधी फ्लैक्स व पोस्टर लेकर जनजागरूकता रैली निकाली। इसी प्रकार ग्राम पंचायत जोरहाडबरी, पुलालीकला में ग्रामीण महिलाओं ने दीवारों पर जन-जन की पुकार है, वोट देना हमारा अधिकार है, जागरूक देश की है पहचान, हो शत-प्रतिशत मतदान, लोकतंत्र में हिस्सेदारी, हम सब की जिम्मेदारी आदि मतदाता जागरूकता संबंधी नारे का दीवारों पर लेखन करके मतदान के माध्यम से सशक्त लोकतंत्र बनाने का संदेश दिया।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने निर्वाचन कार्य के सुचारू संपादन के लिए नोडल अधिकारियों की ली बैठक

सूरजपुर(विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन 2024 के सफल क्रियान्वयन के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी श्री रोहित व्यास द्वारा आज निर्वाचन से संबंधित नोडल अधिकारियों की बैठक ली गई। बैठक में संबंधित अधिकारियों को लोकसभा निर्वाचन में मतदान प्रतिशत बढ़ाने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। स्वीप कार्यक्रम के तहत पात्र मतदाताओं के बीच ज्यादा से ज्यादा सकारात्मक प्रचार-प्रसार करने का निर्देश दिया गया ताकि मतदान के प्रतिशत बढ़े। गर्मी के मौसम को देखते हुए 07 मई मतदान दिवस के तिथि पर सभी मतदान केंद्रों में पर्याप्त पेयजल व्यवस्था सुनिश्चित करने की बात कहीं। उन्होंने मतदान केंद्र पर मतदान दल और मतदाता के बुनियादी सुविधा के अनुरूप चेक लिस्ट बनाकर व्यवस्था करने के निर्देश दिये। जिसके तहत दिव्यांगजनों के लिये मतदान केंद्र में मानक मापदण्ड के अनुरूप रैंप व व्हीलचेयर, बेहतर विद्युत प्रबंधन, शौचालय व्यवस्था, मतदाताओं के लिये सेट की व्यवस्था इत्यादि पर चर्चा की गई। उन्होंने स्पष्ट किया कि मतदान केंद्र में मतदान के लिये पहुंचने वाले प्रत्येक मतदाताओं का अनुभव बेहतर होना चाहिए, इसके साथ ही मतदान केंद्र की सभी व्यवस्था मतदान दिवस पूर्व ही पुख्ता हो जानी चाहिए। उन्होंने समस्त नोडल अधिकारियों की समीक्षा करते हुए उन्हें भारत निर्वाचन आयोग द्वारा समय-समय पर जारी किये जा रहे निर्देशों का कड़ाई से पालन करने की बात कही। उन्होंने प्रशिक्षण में ईव्हीएम एवं व्हीव्हीपैट के अधिक से अधिक हैण्डस्ऑन प्रशिक्षण पर जोर दिया ताकि निर्वाचन कार्य को संपादित करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारीगण ज्यादा से ज्यादा दक्ष हो सकें। बैठक में उन्होंने ईव्हीएम मैनेजमेंट, मोबाईल नेटवर्क विहीन मतदान केंद्र, निर्वाचन प्रशिक्षण, सी-विजिल, पोस्टल बैलेट की तैयारी, रूट चार्ट, और व्यय अनुवीक्षण इकाई के संबंध पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदनी साहू, अपर कलेक्टर नयनतारा सिंह तोमर, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री नरेन्द्र पैकरा व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

मतदाता जागरूकता हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित किए जा रहे विविध कार्यक्रम

सेजेसे बिंझरा व हाईस्कूल स्याहीमुड़ी में हुई प्रतियोगिताएं

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अजीत वसंत के निर्देशन एवं स्वीप नोडल अधिकारी श्री संबित मिश्रा के मार्गदर्शन में लोकसभा निर्वाचन 2024 के दौरान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में युवा, पुरूष, महिलाओं द्वारा मतदान के प्रति जागरूक करने हेतु रैली, दीवारों पर नारा लेखन तथा स्कूलों छात्र-छात्राओं द्वारा निबंध, भाषण, मेहंदी प्रतियोगिता, पोस्टर निर्माण जैसे अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से शत-प्रतिशत मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में जनपद पंचायत पोड़ी उपरोड़ा के स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिंदी माध्यम विद्यालय बिंझरा में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान के तहत नारा लेखन और घर-घर जागरूकता अभियान चलाया गया। जनपद पंचायत पाली के जोरहाडबरी ग्राम पंचायत में ग्रामीण महिला-पुरूषों के द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान के तहत पोस्टर के साथ जागरूकता रैली निकाली गई। इसके साथ ही ग्रामीणों ने सामूहिक रूप से शत-प्रतिशत मतदान करने की शपथ ली। ग्राम पंचायत भैंसमा में ग्रामीण महिलाओं के द्वारा मतदाता जागरूकता रैली निकालकर मतदान कर लोकतंत्र को सशक्त बनाने का संदेश दिया। विगत दिवस शासकीय हाई स्कूल स्याहीमुड़ी में स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत स्लोगन प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्राचार्य डॉ. फरहाना अली के मार्गदर्शन में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। उन्होंने बताया कि कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कोरबा के निर्देशानुसार मतदाताओं को शत-प्रतिशत मताधिकार के लिए प्रेरित व जागरूक करने के उद्देश्य से 24 अप्रैल तक स्वीप मतदाता जागरूकता का कार्यक्रम किए जा रहे हैं। जिसके अंतर्गत विद्यालय में क्विज, रंगोली, पोस्टर, मतदाता जागरूकता रैली, नुक्कड़ नाटक, निबंध स्लोगन प्रतियोगिता की जा रही है। मतदान आवश्यक है, एवम स्वच्छ एवं निष्पक्ष मतदान करना है जैसे विषयों पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही है। स्वीप प्रभारी प्रभा साव ने बताया कि मतदान करना हमारा प्रथम कर्तव्य है, पर हमें मतदान निष्पक्ष रूप से करना चाहिए, किसी भी प्रकार की भ्रामक स्थिति, भय एवं लालसा से बचकर मतदान करनी चाहिए। प्रभा साव ने कहा कि 'आओ सब मिलकर गाएं, वोट देने जरूर जायें' नारे के साथ स्लोगन नारा प्रतियोगिता का आरंभ किया गया जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया, जिसमें प्रथम स्थान पर कुमारी गरिमा, द्वितीय स्थान पर नितिन व कुमारी आरती तथा तृतीय स्थान कुमारी अंजनी व पीयूष ने प्राप्त किया।

संक्षिप्त समाचार

चापड़ लेकर कॉलेज पहुंचा छात्र गिरफ्तार

बिलासपुर(विश्व परिवार)। बिलासपुर के इंजीनियरिंग कॉलेज में चापड़ लेकर एक दूसरे छात्र को डमकाने वाले आरोपी छात्र को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जानकारी मिलते ही पुलिस कॉलेज पहुंच गई और हथियार (लोहे का चापड़) बरामद कर छात्र को गिरफ्तार कर लिया है। मामला कोनी थाना क्षेत्र का है। थाना प्रभारी गोपाल सतपथी ने बताया कि इंजीनियरिंग कॉलेज के हॉस्टल के कमरे में कुछ दिनों पहले आग लग गई थी, जिसे लेकर छात्रों के दो गुटों में विवाद चल रहा है। छात्र एक-दूसरे पर आग लगाने का आरोप लगा रहे हैं। इसके चलते उनके बीच विवाद की स्थिति बन गई थी। मंगलवार की दोपहर पुलिस को जानकारी मिली कि एक छात्र इंजीनियरिंग कॉलेज में धारदार हथियार लेकर पहुंच गया है और छात्रों को धमका रहा है। खबर मिलते ही पुलिस कॉलेज पहुंची और रायपुर जिले के तिल्दा थाना क्षेत्र के कुटरु राम मंदिर के पास रहने वाले सृजन मिश्रा (20) को पकड़ लिया।

मारवाड़ी युवा मंच कोरबा के द्वारा घंटाघर चैक में अस्थाई प्याऊ की स्थापना की गई

कोरबा(विश्व परिवार)। 22 अप्रैल 2024 को मारवाड़ी युवा मंच कोरबा शाखा द्वारा निहारिका घंटाघर चैक में अस्थाई प्याऊ की स्थापना की गई, जो कि प्रतिवर्ष नगर पालिक निगम द्वारा संचालित किया जाया करता था, परंतु इस वर्ष किसी कारण स्थापित न हो सका। जिससे भरी गर्मी में पेयजल की सुविधा से लोग वंचित हो रहे थे। मारवाड़ी युवा मंच द्वारा प्याऊ लगाने की जिम्मेदारी उठाई और एक अस्थाई प्याऊ की स्थापना सभी मंच के साथियों के सहयोग से उपलब्ध कराया गया। जिससे अब वहाँ के राहगीरों को शीतल पेयजल प्राप्त हो सकेगा। इस कार्यक्रम में कोरबा शाखा के सभी पदाधिकारी व युवा साथियों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। साथ ही मारवाड़ी युवा मंच शाखा कोरबा के अध्यक्ष विकास मित्तल ने बताया कि ऐसे ही शहर के अन्य स्थानों में भी जहां जैसी आवश्यकता होगी हमारे शाखा द्वारा अस्थाई प्याऊ लगाया जाएगा जो भरी गर्मी में राहगीरों को शीतल पेयजल प्रदान करेगा। हमारे कोरबा शाखा द्वारा पूर्व से ही अमृत धारा योजना के तहत 100 से अधिक मटकों के जोड़े शहर के प्रतिष्ठानों में संचालित कराया जाता है जो कि मारवाड़ी युवा मंच की अभूतपूर्व पहल सालों से चली आ रही है और प्रति वर्ष इसमें हम 20-30 मटके के जोड़े और लगाए जाते है और उन्हें अच्छे से संचालित पूरी गर्मी भर किया जाता है और आगे भी किया जाता रहेगा।

कलेक्टर ने की चिन्ना पाण्डेय के विरूद्ध जिला बदर की कार्यवाही

कोरबा(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी कोरबा श्री अजीत वसंत ने आदेश जारी कर छत्तीसगढ़ राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा-3 एवं 5 के तहत दीपक उर्फचिन्ना पाण्डेय, उम्र 34 वर्ष, पिता- स्व. राकेश पाण्डेय, साकिन ब्राम्हण मोहल्ला पुरानी बस्ती कोरबा निवासी को जिला बदर करते हुए आदेशित किया है कि वह 24 घंटे के अन्दर कोरबा राजस्व जिला तथा समीपवर्ती जिला बिलासपुर, जांजगीर-चांपा, सक्ती, रायगढ़, सरगुजा, सूरजपुर, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर, गौरला-पेण्ड्रा-मरवाही जिले क्षेत्र से 01 वर्ष की अवधि के लिए बाहर चले जाए और जब तक यह आदेश लागू रहेगा, बिना वैधानिक पूर्वानुमति लिए कोरबा जिले एवं उक्त उल्लेखित जिलों की सीमा में प्रवेश न करें।

प्राथमिक शाला कोसमंदा में समर कैंप आयोजित

रायगढ़(विश्व परिवार)। विकासखंड शिक्षा अधिकारी दिनेश कुमार पटेल, विकास खंड स्त्रोत समन्वयक शैलेन्द्र मिश्रा एवं संकुल शैक्षिक समन्वयक श्रवण कुमार साव के मार्गदर्शन में विकास खंड पुसौर के पंचपारा संकुल के शासकीय प्राथमिक विद्यालय कोसमंदा में 9 से 23 तक अप्रैल तक समर कैंप के रूप में विविध कार्यक्रम एवं गतिविधियां आयोजित की गई। जिसमें बच्चों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से शैक्षणिक और व्यवसायिक गतिविधियां शामिल थे। पठन, लेखन, कहानी निर्माण, मुखौटा निर्माण सह अभिनय के साथ आर्ट एवं क्राफ्ट, दोना पत्तल बनाना, कमीज में बटन लगाना आदि गतिविधियां आयोजित की गई। दस दिवसीय समर कैंप से हो रहे लाभ को पालकों ने देखा और सराहा एवं शाला समिति के अध्यक्ष अक्षय यादव ने प्रशंसा करते हुए कहा कि हमारे विद्यालय में कई प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियां प्रधान पाठक रंजिता महाणा, शिक्षिका सरोजिनी सिदार व सुजाता गुप्ता द्वारा आयोजित की जाती हैं साथ ही इस समर कैंप में बच्चों को व्यवसायिक शिक्षा भी दिया गया जो की प्रशंसनीय है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर शुक्रवार 26 अप्रैल 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

पहले चरण के मतदान में मध्यप्रदेश की तासीर क्या

लोकतंत्र स्वास्थ्य के लिए अच्छी बात नहीं

सात चरणों में कराए जा रहे आम चुनाव-24 के प्रथम चरण में 2019 की तुलना में करीब चार फीसद कम मतदान होने से चुनाव आयोग, राजनीतिक दल गरज यह कि चुनाव प्रक्रिया से संबद्ध सभी पक्ष चिंता में पड़ गए हैं। गौरतलब है कि अठारहवीं लोक सभा के लिए प्रथम चरण का मतदान अपेक्षाकृत धीमी गति से शुरू हुआ लेकिन दिन चढ़ने के बाद भी धीमापन आखिर तक बरकरार रहा। मतदान के एक दिन बाद ही शनिवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मतदाताओं से अपील की कि मतदान, चाहे किसी को भी वोट करें, में जरूर हिस्सा लें। कम मतदान के कारणों की पड़ताल शुरू हो चुकी है, और कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि कई राज्यों में लू की स्थिति, शादियों के मुहूर्त और मतदाताओं में उत्साह की कमी के चलते मतदान फीसद में गिरावट आई है। चार फीसद कम मतदान का मतलब हुआ कि पिछली बार की तुलना में इस बार करीब 48 लाख मतदाता मत देने नहीं पहुंचे। मतदान का पहला चरण बाकी के चरणों का रुख तय करता है, जैसा कि पिछले दो संसदीय चुनावों के आंकड़ों से पता चलता है। इस लिहाज से कहा जा सकता है कि बाकी बचे छह चरणों में भी मतदाताओं में उदासीनता का रुख बना रह सकता है, जो विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए स्वास्थ्य के लिए अच्छी बात नहीं है। यह सवाल परेशानी का सबब बन चुका है कि आखिर, शिक्षित मतदाता तक अपने मताधिकार का उपयोग करने के प्रति इस कदर गैर-जिम्मेदाराना रवैया क्यों अपना रहा है। इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि देश के नागरिक का अपने देश के प्रति, लोकतंत्र के प्रति दायित्व सर्वोपरि है। यदि नागरिक इस प्रकार से मतदान के प्रति बेरुखी दिखाएगा तो लोकतंत्र कैसे समृद्ध बना रह पाएगा। आने वाले छह चरणों में भी मतदाता का यही रुख न बना रहे इसके लिए समन्वित प्रयास करने जरूरी हैं। हालांकि चुनाव आयोग चुनाव में मतदाताओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए खासे प्रयास अरसे से करता रहा है। इस क्रम दस से ज्यादा मशहूर हस्तियों को राजदूत के रूप में नियुक्त करने के साथ ही आईपीएल दर्शकों के बीच मतदान के प्रति जागरूकता फैलाने का काम किया गया।

पोलट्रिक्स/जयराम शुक्ल

लोकसभा चुनाव, मध्यप्रदेश में पहले चरण के महासमर में मौसमी लू-लपट के साथ वोटों की छीन-झपट का जोर चरम पर है। पेंच, कान्हा, बांधवगढ़, संजय टाईगर रिजर्व में सियारों की हुआ-हुआ, चिड़ियों की चहचहाहट और बाघों की दहाड़ पर मैदानी इलाकों में पार्टी कार्यकर्ताओं की तू-तू मैं-मैं और नेताओं की हुंकार भारी पड़ रही है। विन्ध्य की दो सीटों सीधी, शहडोल और महाकोशल की चार सीटों मंडला, जबलपुर, छिन्दवाड़ा, बालाघाट लोकसभा सीटों के लिए आज मत पड़ रहे हैं। यह इलाका कभी %ग्रेट गोड़वाना% का हिस्सा रहा। मुगलों से भिड़ने वाली वीरांगना रानी दुर्गावती से लेकर अंग्रेजों से मोर्चा लेने वाले संग्राम शाह- रघुनाथ शाह के पराक्रम की गाथाएं अभी भी लोगों की जुबान पर हैं। एक तरह से चुनाव के इस पहले चरण का नियंता विशाल वनवासी वर्ग है जिसे रिझाने के लिए भाजपा के पास मोटे पैकेज हैं तो कांग्रेस के पास भावनात्मक और सामाजिक मुद्दे। छिन्दवाड़ा में छीना-झपटी..! इस चरण में जिन सीटों पर मतदान होना है उसमें छिंदवाड़ा पर देश की निगाहें टिकी हैं। कमलनाथ का सबकुछ दांव लगा है। बेटे नकुल नाथ चुनाव मैदान में हैं। बड़ा सवाल यह है कि छिंदवाड़ा कमलनाथ का पर्याय बना रहेगा यह इस बार निजाम बदलेगा। भाजपा ने विवेक साहू बंटी पर दांव खेला है। केन्द्रीय नेतृत्व और रणनीतिकार हर कदम पर इनका मार्गदर्शन कर रहे हैं। इस बार न इन्हें संसाधन की कोई कमी और मनोबल तो जामसांवली के मंदिर के शिखर तक। पर चर्चा के केन्द्र में सिर्फ और सिर्फ कमलनाथ हैं, न नकुलनाथ और न बंटी। बाघ जब बूढ़ा हो जाता है तो जंगल के वन्यजीव उसकी अवहेलना करने लगते हैं। न उसकी गुर्राहट काम आती और जंगल के राजा होने का रसूख। कमलनाथ के साथ कुछ ऐसा ही ही। एक एक करके सभी विश्वसनीय साथ छोड़ते जा रहे हैं। सबसे बड़ी चोट अमरवाड़ा के विधायक कमलेश शाह ने दी। कांग्रेस की टिकट पर पच्चीस हजार मतों से जीतने वाले कमलेश गोड़वाना

के शाही वंशज हैं। उनका टूटना दांए हाथ के कट जाने जैसा है। नकुलनाथ के पिछले चुनाव में अमरवाड़ा ने 22 हजार की लीड न दी होती तो जीतना ही मुश्किल था। छिन्दवाड़ा शहर में भी विपरीत हवा है। सबसे पुराने साथी दीपक सक्सेना और महापौर विक्रम अहाके ने बगावत करके छिन्दवाड़ा की मांद को भाजपा के लिए सुभेद्य बना दिया है। विधानसभा में जिस छिन्दवाड़ा जिले की सभी सीटें कांग्रेस ने जीती हों उसके हर विधानसभा में नेताओं कार्यकर्ताओं की पतझड़ है। यहां वनवासी वोटों का प्रतिशत 35 से ऊपर है। तामिया के भारिया वनवासी हैं तो मैदानी इलाके में गोंड। अबतक कांग्रेस का साथ देते आ रहे थे इस बार जन-मन में क्या है..? कोई समझ नहीं पा रहा। बालाघाट में कंकर का बंकर! छिन्दवाड़ा की जोड़ीदार सीट है बालाघाट। मध्यप्रदेश में नक्सलियों का बड़ा ठिकाना। खौफ इतना कि एक बार नक्सलियों ने दिग्विजय सिंह की कांग्रेस सरकार के मंत्री लिखीराम कांवरे को कुल्हाड़ियों से काट डाला था। हिना कांवरे यहीं से कांग्रेस विधायक हैं। बालाघाट की सीमा छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र से लगती है। नक्सलियों का यह एक कॉरीडोर भी है। लगभग 38 प्रतिशत वनवासी बाहुल्य यह लोकसभा क्षेत्र पिछले छह बार से भाजपा के कब्जे में है। लेकिन विधानसभा में भाजपा एक बार भी क्लीनस्वीप नहीं कर पाई। पारंपरिक वनवासी भाजपा की ओर झुकें हैं। नक्सली सत्ता के खिलाफ रहते हैं सो इनका जहां असर होगा वे भाजपा के खिलाफ ही अपना फरमान देंगें। इस बार एक बड़ा फैक्टर हैं कंकर मुंजारे। कभी ये फायर ब्रांड विधायक हुआ करते थे। एक बार निर्दलीय तो एक बार सपा से। ये बालाघाट से एक बार सांसद भी रहे चुके हैं। इस बार बसपा से प्रत्याशी हैं। पिछड़े लोधी वर्ग से आते हैं जो कि यहां की प्रभावी जमात है, जन-धन-बल तीनों से। पिछली बार बसपा को यहां से 6.5 प्रतिशत वोट मिले थे। इतने प्रतिशत वोटों की घट-बढ़ सारे समीकरण बिगाड़ देती है। कंकर मुंजारे की पत्नी अनुभा मुंजारे कांग्रेस की विधायक हैं और कांग्रेस के लिए जी जान से जुटी हैं। जाति से बिंधी राजनीति को साधने के लिए भाजपा ने यहां से भारती पारधी को मैदान में उतारा है तो कांग्रेस ने सम्राट सिंह सरस्वार को। नक्सली आतंक एक बड़ा मुद्दा है। भाजपा सरकार ने उसपर काबू पाया है। वनवासियों ने अति गरीबों के लिए भाजपा की जन-मन योजना असर दिखा रही है। भाजपा के पुराने स्टालवार्ट ढाल सिंह बिसेन, गौरीशंकर बिसेन और दादा देशमुख क्या कर रहे हैं, खबरें कुछ भी बयान नहीं करतीं पर अब इतना माद्दा भी नहीं बचा कि टिकट कटने के बाद सहानुभूति के जरिए पार्टी का कुछ बिगाड़ सकें। गोंगपा भी कभी एक बड़ा कारक रहा करती थी लेकिन अब तितर-बितर है। भाजपा का ट्रैक रिकॉर्ड फिलहाल उसके साथ है.. और इस चुनाव में उन्नीस के मुकाबले बीस ही रहने वाला। मंडला से अबतक जो खबरें आ रही हैं वो भाजपा की पेशानी पर बल डालने वाली हैं। फग्गन सिंह कुलस्ते छठवीं बार जीत के इरादे से मैदान पर हैं। उन्हें कांग्रेस विधायक ओंकार सिंह मरकाम से खासी टक्कर मिल रही है। फग्गन केन्द्र में बरसों से मंत्री रहे हैं तो ओंकार पिछले तीन बार से अच्छे खासे मतों से विधायकी जीत रहे हैं। वे कांग्रेस की सर्वोच्च समितियों में भी है। पिछले विधानसभा चुनाव में मंडला का रुख कांग्रेस के पक्ष में रहा है। लोकसभा क्षेत्र की आठ विधानसभा सीटों में से पांच कांग्रेस के पास है। कुलस्ते स्वयं चुनाव हार चुके हैं वह भी ठीक-ठाक मार्जिन से। जनमत कुलस्ते के खिलाफ क्यों है..? वहां के एक स्थानीय पत्रकार से यह टटोला तो जवाब मिला कि कुलस्ते वनवासियों के बीच अब इलीट क्लास के है। उनका रहन-सहन अंदाज सबकुछ बदल गया। केन्द्रीय मंत्री रहते हुए वे जन सामान्य से कटते गए। महत्वाकांक्षी इतने कि कभी प्रदेश अध्यक्ष की रेस में खुद को खड़ा कर देते हैं तो कभी मुख्यमंत्री के। चुनाव हारने के बाद उन्हें उम्मीदवार बनाकर क्या भाजपा ने गलत किया- नहीं लोकसभा का दायरा और मुद्दे अलग होते हैं और फग्गनसिंह गोड़वाना के सबसे चमकदार चेहरे हैं, भाजपा के एक जिला पदाधिकारी ने जवाब दिया। दरअसल मंडला और डिंडोरी में मिशनरीज का गहरा असर है। नई पीढ़ी के लड़के जो इनकी स्कूलों से पढ़कर निकले और नौकरियों में हैं वे मूलतः भाजपा के खिलाफ है। एक तरह से वे दूल की भांति इस्तेमाल होते हैं, समाज में उनका असर गहरा है। जबलपुर भाजपा के लिए शुभंकर है। भाजपा की टिकट पर देश का पहला सांसद जबलपुर ने ही दिया। दरअसल 1980 के चुनाव में यहां से कांग्रेस मुन्दर शर्मा जीते थे। शर्मा जी का बीच कार्यकाल में ही निधन हो गया तो उपचुनाव में दादा बाबूराव परांजपे यहां से भाजपा की टिकट पर चुनकर गए।

विचार

राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र चुनाव आयोग में पंजीकृत हो....

लोकतांत्रिक देशों में चुनाव के समय घोषणा पत्र जारी करने का चलन रहा है। दरअसल घोषणा पत्र का चलन संबंधित पार्टी के द्वारा आने वाले समय में कौन से काम को हाथ में लेंगे और क्या होना चाहिए इसका एक विवरण या पांच वर्षीय कार्यक्रम जैसा होता है। परंतु पिछले कुछ दशकों से यह अनुभव हो रहा है कि राजनीतिक दल विशेषतरू जो सत्ताधारी या सत्ता के नजदीक हैं, वह घोषणाएं तो बहुत करते हैं परंतु उसके ऊपर अमल नहीं करते हैं। घोषणा पत्रों के स्वरूप भी अब बदल रहे हैं। 1952 से लेकर 1967 तक के दलों के चुनाव घोषणा पत्रों को देखें तो उनमें मुख्यतरू नीति परिवर्तन के संदेश और वायदे ज्यादा होते थे। परंतु अब घोषणा पत्र नीति परिवर्तन के बजाय वोट खरीदने के मंत्र बन रहे हैं। और घोषणा पत्र में मुख्यतरू राहत की बातों की चर्चा ही मुख्य होती है कि अगर सरकार बनती है तो कौन-कौन सी रियायत मतदाताओं को देंगे। मैं रियायतों के खिलाफ नहीं हूं। परंतु रियायतें स्थानी नहीं होनी चाहिए वरना वह लोकतांत्रिक विफलता में बदल सकती हैं। रियायतें एक अस्थाई संक्रमणता व्यवस्था हो जो आमजन को समर्थ बनाने की अवधि के बीच की मदद हो परंतु आमतौर पर दलों का लक्ष्य स्थाई विकलांगता पैदा करना हो गया यानि समर्थ न बनाकर निरंतर कमजोर रखना तथा मदद के नाम पर वोट हासिल करते रहना एक स्थाई रणनीति बन गई है। इस 2024 के लोकसभा चुनाव का जो घोषणा पत्र कांग्रेस ने जारी किया है उसमें यह कहा है कि गरीब महिलाओं को हर साल 1 लाख रुपए देंगे। भारतीय जनता पार्टी भी इसके पहले चुनाव में लगभग ऐसी ही अन्य घोषणाएं करती रही। उत्तर प्रदेश के पिछले विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने 5०० रुपए तक के किसानों के कर्ज माफ करने का ऐलान किया था और इस आधार पर उन्हें वोट भी मिला, बाद में छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने भी किसानों के कर्ज माफी का ऐलान किया और उन्हें भी किसानों का समर्थन मिला। पिछले लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने भी यह वादा किया कि हम हर किसान को साल का रु. 6000 किसान सम्मान निधि देंगे और किसान उनकी ओर कुछ उन्मुख भी हुए। कुल मिलाकर स्थिति यही है प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से कुछ राहत के नाम पर रुपयों का लालच देकर पार्टियां वोट खरीदती हैं। प्रत्याशियों के द्वारा व्यक्तिगत तौर पर मतदाताओं को आर्थिक लाभ पहुंचाना या कोई सुविधा देना चुनावी कानून की दृष्टि से अपराध है और इस अपराध के लिए उनके चुनाव भी रद्द हो सकते हैं, परंतु राजनीतिक दलों के द्वारा घोषणा पत्र के नाम पर यह थोकबंद खरीद चुनावी अपराध नहीं मानी जाती। सार्वजनिक रूप से ऐलान करके इस प्रकार से मतदाताओं को ललचाते हैं और वोट लेते हैं। घोषणा पत्र जारी करने की प्रक्रिया में एक और परिवर्तन आया है कि आम तौर पर घोषणा पत्र पार्टियां बगैर किसी सामाजिक और आर्थिक आंकलन के करती हैं। 1952 के बाद लगभग 2-3 दशकों तक पार्टियां जो घोषणा पत्र जारी करती थीं उनके पीछे एक उत्तरदायित्व की भावना तथा वस्तुपरक आंकलन होता था कि वहघोषणा कैसे पूरी कर सकेंगे? जिनके लिए वे जरूरी मानती हैं। क्या देश के आर्थिक हालात इसके लिए समर्थ होंगे। मुख्यतरू उनके चुनाव घोषणा पत्र में नीति निर्माण के ऊपर जोर दिया जाता था। अब पार्टियों के जो घोषणा पत्र जारी हो रहे हैं वह इतने लंबे चैड़े हो रहे हैं कि उन्हें याद रखना जनता को तो दूर पार्टी के नेताओं को भी याद रखना संभव नहीं बचा है। पाँच सौ हजार वायदे और अलग-अलग क्षेत्रों के वायदे वाले इन चुनाव घोषणा पत्रों में सौ-सौ पेज तक होते हैं। इन चुनाव घोषणा पत्र को ना तो पार्टी वाले और ना मतदाता पढ़ते हैं। कोई विशिष्ट मुद्दे पर या किसी विशिष्ट राहत की घोषणा पर देश में चर्चा हो जाती है, परंतु उसका कोई महत्व नहीं होता। अभी जो चुनाव घोषणा पत्र जारी हुए हैं इनमें उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी ने भी कल घोषणा की है कि छोटे किसानों को प्रति माह प्रति किसान रु. 5000 की सहायता दी जाएगी। यह ढाई एकड़ से कम भूमि वाले किसानों को दी जाएगी। मैं नहीं जानता हूं कि उन्होंने इसका कोई आंकड़ा निकाला है? क्योंकि अगर निकाला होता तो वह उनकी भी संख्या भी जारी करते। इसी प्रकार हर मजदूर को रु. 5000 प्रतिमाह पेंशन देने का वादा किया है। सामान्य मजदूरी वाले मजदूरों की संख्या अनुमानतरू देश में (खेती और गैर खेती वाले मिलाकर) लगभग 30 करोड़ के आसपास होगी। यानी प्रति महीने लगभग डेढ़ लाख करोड़ रुपए और साल का 18 लाख करोड़ रुपए अकेले इन मजदूरों की पेंशन पर खर्च होगा।

बेसहारा गोवंश को आश्रय दे प्रदेश सरकार

रणजीत राणा

आशा है प्रदेश सरकार इन सुझावों को बिना देरी के व्यापक जनहित में लागू करने का प्रयत्न करेगी, ताकि किसानों की फसलों की रक्षा हो सके, सडक़ों पर यातायात ठीक हो सके और गौवंश को रैन-बसेरा प्राप्त हो सके भारतीय सभ्यता में गाय को सदैव देवी माता स्वरूप माना जाता है। भारत में गोपालन की प्राचीन काल से ही परंपरा रही है। इसलिए उस समय घी, दूध और दही की नदियां बहती थीं। ऋषियों के आश्रम जंगलों में होते थे। वहां हजारों गउएं स्वतंत्र रूप से विचरण करती और जंगलों में चरती थीं। भगवान श्रीकृष्ण जी ने द्वापर युग में खुद गऊओं की सेवा की। इसलिए उनका एक नाम श्री गोपाल आज भी संसार भर में प्रसिद्ध है। भगवान ने मानव जाति को गाय वरदान स्वरूप दी थी, लेकिन आज का स्वार्थी मानव गाय को आफत समझ रहा है। वह दिन दूर नहीं जब गाय के दर्शन दुर्लभ हो जाएंगे। जब गाय नहीं होगी तो किसान नहीं होगा। जब किसान नहीं होंगे तो गांव भी नहीं होंगे। जब गांव नहीं होंगे तो देश नहीं होगा। धीरे-धीरे तेल के भंडार कम हो रहे हैं। जब तेल खत्म हो जाएगा, तब खेती के लिए बैलों की जरूरत होगी, लेकिन क्या तब तक बैल बच पाएंगे? खेद है कि 33 करोड़ देवी-देवताओं को धारण करने वाली, पंचगव्य देने वाली, सूतक-पातक से बचाने वाली गाय माता आज जूठन खा रही है, पत्थर व डंडे खा रही है। भाईयो व बहनो, जिस घर में, जिस गांव में संतान के कारण मां रोती है, वहां पर कभी कल्याण नहीं हो सकता है। गाय मां है और बैल धर्म है। गाय के पंचगव्य से अनेकों प्रकार की औषधियां बनती हैं। गऊ पूजन व गौदान का विशेष महत्त्व होता है। भैंस पूजन का महत्व नहीं है। प्रात: उठकर गाय के शरीर पर हाथ फेरो, परिक्रमा करके चरण वंदना करो तथा एक मुट्ठी घास या एक रोटी गाय को हर रोज दें, ऐसा करने से प्रभु के अवश्य दर्शन होते हैं। रोगी गाय को औषधि व सेवा करने वाला व्यक्ति रोगमुक्त हो जाता है। वर्तमान में गोबर से निर्मित वस्तुएं, यथा आभूषण, राखी, झूमर, मूर्तियां, गमले एवं नेम प्लेट सर्वाधिक चलन में हैं। अगर हम हिमाचल प्रदेश की वर्तमान स्थिति की बात करें तो यहां पर गौवंश की स्थिति ठीक नहीं है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस समय में लगभग 10000 से अधिक गौवंश बेसहारा चारे तथा पानी की तलाश में इधर से उधर धक्के खा रहे हैं, जो हमारे देवभूमि के लोगों के लिए बड़े ही दु:ख और शर्म की बात है। पूर्व में रहे ग्रामीण पशुपालन मंत्री श्री वीरेंद्र कंवर और पूर्व मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर ने हिमाचल प्रदेश गौसेवा आयोग की स्थापना करके इन बेसहारा गौवंश को आश्रय देने के लिए प्रदेश में कई स्थानों पर बड़ी-बड़ी गऊ सैंक्चुरी और गौशालाओं की स्थापना करके बड़ा साहसिक और नेक कार्य किया है। लेखक ने सरकार के वर्तमान कृषि एवं पुशपालन मंत्री को 14.11.2023 को बेसहारा गौवंश के लिए गौसेवा आयोग द्वारा गौशालाएं व गऊ सैंक्चुरी बनाने तथा गौसेवकों की भर्ती करने बारे कुछ सुझाव एक पत्र द्वारा भेजे थे तथा उस पत्र की प्रतिलिपि मुख्यमंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री, पीडब्ल्यूडी मंत्री तथा अन्य को भी भेजी थी। मुख्य जरूरी सुझाव ये हैं : एक, इस समय प्रदेश में जो लगभग 10000 से ज्यादा बेसहारा गौवंश हैं, इनकी सेवा के लिए गौसेवा आयोग प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकास खंड में तीन-तीन बड़ी गौशालाएं बनाएं, ताकि इन अभागे पालतू छोड़े हुए बेसहारा गौवंश को इनका खोया हुआ रैन-बसेरा दोबारा मिले सके। दो, इन 10000 बेसहारा गौवंश की सेवा के लिए गौसेवा आयोग 1000 गौसेवकों की भर्ती करे, यानी प्रत्येक 10 गौवंश पर एक गौसेवक नियुक्त हो, जिसकी तनख्वाह प्रति महीना 6000 रुपए हो तथा साथ में मुफ्त रिहायश और भोजन की व्यवस्था हो। तीन, इन गौसेवकों को आठ या दस साल बाद की सेवा के बाद प्रदेश सरकार अपने विभागों या बोर्डों में चतुर्थ श्रेणी कर्मियों में नियुक्त करने का प्रबन्ध करे। चार, जितने भी लोगों ने प्रदेश में गाय या बैल पाल रखे हैं, उन सबकी रजिस्ट्रेशन होनी चाहिए यानी उन सबके गौवंश कार्ड बनाए जाने चाहिएं, जैसे आदमियों के राशन कार्ड बनाए जाते हैं। यह कार्य पशुपालन विभाग द्वारा पंचायतों के सहयोग से किया जाना चाहिए। पांच, अगर कोई पशुपालक अपने गौवंश को बेसहारा छोड़ता है तो ऐसे पशुपालक को पहली बार 15000 रुपए, दूसरी बार 20000 रुपए और तीसरी बार 25000 रुपए और एक साल की सजा भी होनी चाहिए। छह, प्रदेश सरकार राज्य में गोमूत्र आधारित कोई बड़ी आयुर्वेदिक फार्मेसी स्थापित करे ताकि गौवंश पालने वालों को आर्थिक सहायता भी मिल सके और प्रदेश की जनता को आयुर्वेदिक औषधियां भी मिल सके। सात, पशुपालकों को बढिय़ा बैल पालने पर गौसेवा आयोग द्वारा सालाना लगभग 6000 रुपए की प्रोत्साहन राशि दी जानी चाहिए। आठ, जो शामलात भूमि सरकार के पास वनों के साथ है, वहां सरकार उस भूमि का अधिग्रहण करके या किसानों से बंजर भूमि लेकर गौशालाएं बनाए। नौ, सरकार शराब की बिक्री से अढ़ाई रुपए प्रति बोतल की सैस को बढ़ाकर 10 रुपए प्रति बोतल के हिसाब से गौ कल्याण कोष के लिए निर्धारित करे। दस, प्रदेश सरकार बड़े मंदिर ट्रस्टों की आमदन के 15 प्रतिशत हिस्से को बढ़ाकर 25 प्रतिशत गौ कल्याण कोष के लिए निर्धारित करे। ग्यारह, प्रदेश सरकार विधानसभा में कानून बनाकर गौ कल्याण कोष की बढ़ोतरी के लिए प्रत्येक विधायक तथा मंत्री से पांच-पांच हजार रुपए दान लेने की व्यवस्था शुरू करे। बारह, इसी प्रकार प्रदेश सरकार गौ कल्याण कोष के लिए प्रदेश के सारे पहली श्रेणी के अधिकारियों से 500 रुपए, दूसरी श्रेणी वालों में से 250 रुपए, तीसरी श्रेणी के कर्मचारियों से 100 रुपए तथा चतुर्थ श्रेणी वालों से 50 रुपए प्रति महीना दान लेने की व्यवस्था शुरू करे।

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता दवा क्षेत्र

डा. अश्विनी महाजन

भारत सरकार को सजग रहते हुए एपीआई के क्षेत्र में चीन द्वारा की जा रही डंपिंग को रोकने के लिए हरसंभव प्रयास करने होंगे। अन्य रसायनों के क्षेत्र में भी यह बात लागू होती है लंबे समय से चीन पर निर्भर भारत के फार्मा क्षेत्र को अब कुछ राहत मिलने लगी है। कारण है आत्मनिर्भर भारत अभियान। गौरतलब है कि वर्ष 2000 तक भारत का दवा निर्माण क्षेत्र लगभग पूरी तरह से आत्मनिर्भर था। दवा निर्माण में जो आवश्यक सामग्री इस्तेमाल होती है, उसे एक्टिव फार्मास्यूटिकल इंग्रीडिएंट्स, यानी एपीआई के नाम से जाना जाता है। वर्ष 2000 तक दवा निर्माण के क्षेत्र में जिन एपीआई की आवश्यकता होती थी, वे अधिकांशत: भारत में ही निर्मित होते थे। देश में इनके निर्माताओं में आवश्यक प्रतिस्पर्धा भी थी, जिसके कारण दवा निर्माताओं को देश में एपीआई आसानी से और उचित कीमत पर उपलब्ध होते थे। इसके कारण देश का दवा उद्योग न केवल तेजी से आगे बढ़ रहा था, बल्कि दुनियाभर के लोगों को उचित कीमत पर आवश्यक दवाएं उपलब्ध कराने में भी समर्थ था। चीन ने एक षड्यंत्र के तहत भारत के एपीआई क्षेत्र को तबाह करना शुरू किया। चीन से आने वाले एपीआई को अत्यंत ही कम कीमतों पर भारत में भेजा जाने लगा। इसका असर यह हुआ कि भारत का एपीआई उद्योग प्रतिस्पर्धी नहीं रहा और हमारी एपीआई इकाइयां धीरे-धीरे करके बंद होने लगी। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट की जा सकती है। एमोक्सीसाइक्लिन नाम की एंटीबायोटिक दवा, एक्टिव फार्मास्युटिकल इंग्रीडिएंट पेनीसिलिन-जी से व्युत्पन्न उत्पाद है। पेनीसिलिन-जी नाम की एपीआई भारत में पर्याप्त मात्रा में बनती थी और उसका अंतरराष्ट्रीय मूल्य लगभग 22 डॉलर प्रति किलोग्राम था। लेकिन चीन ने इस एपीआई की डंपिंग 9 डॉलर प्रति किलो से भी कम पर करनी शुरू कर दी। इसके कारण भारत की इस

एपीआई को बनाने वाली इकाइयां बंद हो गईं। उसके बाद चीन ने इसी एपीआई को पहले दोगुणा और फिर चार गुणा कीमत पर बेचना शुरू कर दिया। किसी विकल्प के अभाव में भारत की दवा कंपनियों को यह एपीआई, चीन द्वारा निर्धारित कीमत पर खरीदना जरूरी हो गया। लगभग यही स्थिति अन्य एपीआई की भी रही और कई एपीआई पूर्व से 10 से 20 गुणा कीमत पर भी बेचे जाने लगे। उदाहरण के लिए फॉलिक एसिड, जो विटामिन की दवा बनाने के काम आता है, की कीमत 13 गुणा से भी ज्यादा बढ़ा दी गई थी। ऐसी स्थिति दवाओं के लगभग सभी एपीआई के संदर्भ में थी। कीमतों में सबसे अधिक वृद्धि कोरोना काल में देखी गई और यह समझ में आना शुरू हुआ कि देश में एपीआई उद्योग की पुर्नस्थापना, केवल दवा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए या दवाओं की कीमतों को कम करने के लिए ही नहीं, बल्कि देश में स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए भी जरूरी है। यह सर्वविदित ही है कि चीन भारत के साथ शत्रुतापूर्ण संबंध रखता है, इसलिए दवा के लिए आवश्यक सामग्री हेतु चीन पर निर्भर नहीं किया जा सकता। एपीआई में आत्मनिर्भरता : मई 2020 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन सभी वस्तुओं, जिनका उत्पादन चीन और अन्य देशों द्वारा डंपिंग के कारण बाधित हो गया था, के उद्योगों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से और देश में मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने और विदेशों पर निर्भरता को समाप्त करने के उद्देश्य से, आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरुआत की। प्रारंभिक तौर पर इसके लिए जिन वस्तुओं की 13 श्रेणियों को चिन्हित किया गया, उनमें एपीआई भी शामिल थे। आत्मनिर्भरता हेतु अपनाए गए उपायों में से एक महत्वपूर्ण उपाय को उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन यानी प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) के रूप में जाना जाता है। गौरतलब है कि एपीआई क्षेत्र के लिए इस पीएलआई स्कीम में 41 उत्पाद शामिल किए गए, जिनमें मधुमेह, तपेदिक, स्टेरॉयड और एंटीबायोटिक्स के लिए दवाओं पर विशेष आग्रह रखा गया, और उसके लिए 20000 करोड़ रुपए की राशि प्रस्तावित की गई। यह योजना 21 जुलाई 2020 को अधिसूचित की गई। हर्ष का विषय यह है कि यह योजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने लगी है और देश दवा उद्योग के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रहा है। उदाहरण के लिए पेनिसिलिन-जी, जिसका भारत में उत्पादन बंद हो गया था, जिसके कारण भारतीय उद्योगों से इस एपीआई की ऊंची कीमत वसूली जा रही थी, अब उसके उत्पादन हेतु ऑरविन्दो फार्मा लिमिटेड, टोरेंट फार्मास्यूटिकल आदि कंपनियों ने इसकी उत्पादन इकाइयां शुरू कर दी हैं और माना जा रहा है कि ऑरविन्दो फार्मा इस पेनिसिलिन-जी एपीआई का उत्पादन अप्रैल, 2024 में और टोरेंट जून-जुलाई 2024 में शुरू कर देगा। स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया का यह कहना है कि पीएलआई योजना और अन्य प्रयासों के कारण आज भारत अधिकांश एपीआई में आत्मनिर्भरता हासिल कर चुका है, जिसके कारण चीन पर निर्भरता कम हुई है। सितंबर 2023 तक पीएलआई स्कीम के तहत फार्मा कंपनियों को 4000 करोड़ रुपए और मेडिकल उपकरणों के लिए 2000 करोड़ रुपए के निवेश की अनुमति दी जा चुकी थी। इसके अलावा केन्द्र ने 3000 करोड़ रुपए की लागत से तीन बल्क (थोक) ड्रग पार्कों का निर्माण किया है। घटने लगी हैं कीमतें : जैसे-जैसे एपीआई के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के सुपरिणाम आने लगे हैं, वैसे-वैसे एपीआई की कीमतें भी घटने लगी हैं। फार्मा उद्योग के जानकार बता रहे हैं कि एपीआई की कीमतों में कोविड के समय से अभी तक 50 प्रतिशत की कमी आई है। इसमें से सबसे तेज गति से कमी पिछले दो महीनों में ही आई है। समझा जा सकता है कि कोविड काल में जब एपीआई के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के प्रयास शुरू हुए थे, अब वे फलीभूत होना शुरू हुए हैं। इकॉनोमिक टाइम्स की एक खबर के अनुसार बुखार की दवा पैरासिटामोल के एपीआई की कीमत जो कोविड काल में 900 रुपए प्रति किलो पहुंच गई थी, वह घटकर अब मात्र 250 रुपए प्रति किलो रह गई है। उसी प्रकार अस्थमा की दवा मॉनटैलूकास्ट सोडियम 45000 रुपए प्रति किलो से घटकर मात्र 28000 रुपए प्रति किलो रह गई है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शुक्रवार 26 अप्रैल 2024
www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सन्मति की सदस्य परिचय पुस्तिका का हुआ विमोचन

जयपुर (विश्व परिवार)। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सन्मति द्वारा सत्र 2023 के सदस्यो की परिचय पुस्तिका का विमोचन समारोह के अंतर्गत किया गया। संस्थापक अध्यक्ष राकेश- समता गोदिका के अनुसार मुख्य समन्वयक दर्शन- विनिता बाकलीवाल के नेतृत्व में संपादक मंडल मनीष- शोभना लोंग्या, राजेश- रानी पाटनी, अनिल- प्रेमा रावका, संजय- ज्योति छाबड़ा, कमल- मंजू ठोलिया, राकेश- रेणु संघी, नीतीश- मीनू पांड्या की टीम ने ग्रुप की सभी गतिविधियों को समाहित करते हुए सुंदर स्मारिका का प्रकाशन किया हैं। निवर्तमान सचिव अनिल- निशा संघी के अनुसार प्रमुख समाज सेवी प्रमोद पहाड़िया, समाचार जगत के संपादक शैलेंद्र गोधा, ज्ञान चंद झांझरी, ग्रुप संरक्षक सुरेंद्र पांड्या, जैनेंद्र जैन, राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष सुभाष चंद जैन, राजस्थान युवा महासभा के अध्यक्ष प्रदीप जैन, महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा सहित अनेक गणमान्य नागरिक इस अवसर पर उपस्थिति रहे।

शोक सभा में चौधरी जयकुमार जैन एडवोकेट नवरत्न को दी श्रद्धांजलि

ललितपुर (विश्व परिवार)। सकल दिगंबर जैन समाज की शोक सभा में मोहल्ला सरफयाना तालबेहट निवासी चौधरी अजय कुमार,

आलोक कुमार, अनूप कुमार, अभय कुमार जैन के पूजनीय पिताजी एवं पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री प्रदीप जैन आदित्य के ससुर पूर्व अध्यक्ष चौधरी जयकुमार जैन एडवोकेट नवरत्न के 82 वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। अहिंसा सेवा संगठन के संस्थापक विशाल जैन पवा ने इसे समाज एवं नगर के लिये अपूर्णीय क्षति बताया। श्रद्धांजलि देने वालों में मिठ्या संत प्रसाद, मोदी कमल कुमार, डॉ. महेंद्र जैन, प्रकाश परिधान, यशपाल जैन, प्रवीन कुमार, देवेंद्र बसार, मनोज कुमार, राकेश मोदी, मेघराज जैन, पुष्पेंद्र कुमार, चक्रेश जैन, अरुण कुमार, कपिल मोदी, संजय कुमार, श्रेयांश जैन, सुशील मोदी, प्रदीप एड, विकास पवा, अजय जैन अज्जू, धरणेन्द्र जैन, हितेंद्र कुमार, सौरभ पवैया, अमितेष जैन, अरविन्द कुमार, विकास भंडारी, सौरभ जैन, रुपेश भंडारी, रंजीत जैन, अनुराग मिठ्या, राजेंद्र जैन, रोहित कुमार, राहुल जैन, सौरभ मोदी, आदेश पवा, स्वतंत्र जैन, सुरेन्द्र, नीलेश, राजीव, मनीष, अखिलेश, अजय मोनू, अरविंद, अंजेश, नितिन बुखारिया, प्रिंस जैन, अभिषेक जैन, आशीष कुमार, अंकित जैन, वैभव जैन, प्रमिलाराज, विनय, अक्षत, अमन, शुभम, सरल, पारस आदि प्रमुख रहे।

कलेक्टर डॉ. सिंह के निर्देश पर कोविड-19 के मृतकों का हुआ अंतिम संस्कार

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह के निर्देश पर आज कोविड-19 से तीन मृतकों का देवेंद्र नगर मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार किया गया। मृतकों के परिजनों की सहमति ली गई, फिर अंतिम संस्कार की प्रक्रिया की गई। अंतिम संस्कार कोविड-19 के गाइड लाइन का पालन करते हुए किया गया। इस दौरान जिला प्रशासन, नगर निगम, मेकाहारा, पुलिस विभाग की टीम उपस्थित रही। गौरतलब है कि कोविड-19 से मृत तीन लोगों के शव मेकाहारा के चीरघर में रखे गए थे। जिला प्रशासन ने मृतकों के परिजनों की जानकारी जुटाकर सहमति ली और उनका अंतिम संस्कार किया गया।

भाजपा बताएं मोदी सरकार ने 70 वर्ष से ऊपर आयु के बुजुर्गों को स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित क्यों रखा: कांग्रेस

रायपुर (आरएनएस)। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा की भाजपा को चुनाव में हार नजर आ रही है इसलिए

अब उन्हें बुजुर्गों की याद आ रही हैं अब बुजुर्गों को स्वास्थ्य सुविधा देने का दावा कर फॉर्म भरवा रही हैं। देश के करोड़ों बुजुर्ग भाजपा के इस चरित्र को देख चुके हैं। अब बुजुर्ग भी भाजपा के खिलाफ मतदान करेंगे और उनके साथ हुए अन्याय धोखा का बदला लेंगे। भाजपा को बताना चाहिए कि मोदी सरकार ने 70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों को स्वास्थ्य की सुविधाओं से वंचित क्यों रखा है ? ट्रेन में यात्रा के दौरान बुजुर्गों को मिलने वाली सब्सिडी को खत्म कर दिया गया ? कई सारी सुविधाये 2014 के पहले दी जा रही थी वह सारी सुविधाएं भी खत्म कर दी गई है। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि मोदी सरकार युवाओ, बुजुर्गों, किसान, महिला, मजदूर, के लिये कोई काम नहीं किया हैं। जब चुनाव आते हैं तब भाजपा फॉर्म भराने की नाटक और नौटंकी करती हैं। विधानसभा चुनाव के दौरान भी 80 लाख से अधिक महिलाओं से फार्म भरवाया गया था और मात्र 30 प्रतिशत महिलाओं को ही महतारी वंदन योजना का पैसा मिला है। भाजपा नेताओं को अब देश की जनता चिंता मुक्त करने जा रही है देश के किसान नौजवान माता बहने बुजुर्ग व्यापारियों की चिंता और उनके बेहतरी के लिए कांग्रेस की सरकार बनने जा रही है। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के बाद का स्वास्थ्य व्यवस्था डगमगा गई है।

गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में हुई समाधिस्थ क्षुल्लिका अमृतश्री माताजी की विनयांजलि सभा का आयोजन

जयपुर (विश्व परिवार)। प. पू. भारत गौरव, श्रमणी गणिनी आर्यिका 105 गुरूमाँ विज्ञाश्री माताजी ससंघ सान्निध्य में जनकपुरी, इमली फाटक जैन मंदिर में समाधिस्थ क्षुल्लिका 105 श्री अमृतश्री माताजी की विनयांजलि सभा का आयोजन हुआ। सकल समाज सहित परिवार के सदस्यों ने भी माताजी के चरणों में विनयांजलि समर्पित की।

तत्पश्चात् पूज्य माताजी ने जैन समाज को उद्बोधन देते हुए कहा कि - जो भव्य जीव एक बार समता पूर्वक समाधिमरण को प्राप्त कर लेता है वह कम से कम 2-3 भव या अधिक से अधिक 7-8 भव में मोक्ष प्राप्त कर लेता है। सल्लेखना आत्मघात नहीं, आत्मानन्द का उत्सव है। पुण्यशाली जीव ही उत्कृष्ट समाधि को प्राप्त कर पाता है। सौ बार दीक्षा लेना, देना या देखने के बराबर पुण्य एक बार सल्लेखना देखने का है।

गुरूभक्त कमल कविता गोधा किशनगढ़ सपरिवार ने गुरुमां का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। संदीप जैन जोधपुर ने गुरुमां के दर्शनों का लाभ प्राप्त कर-मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

-अभिषेक जैन लुहाड़िया

मतदान के ठीक पूर्व नक्सलियों ने किया बंद का आव्हान, कांकेर, महासमुंद, राजनांदगांव में आज होगा मतदान

भानुप्रतापपुर-रायपुर (आरएनएस)। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान कल यानी 26 अप्रैल को होना है. जिसमें छत्तीसगढ़ की तीन लोकसभा सीटों कांकेर, महासमुंद और राजनांदगांव में मतदान होगा. वहीं मतदान के एक दिन पहले नक्सलियों ने पूरे बस्तर संभाग में बंद का आह्वान किया है. बता दें कि कांकेर जिले के हापाटोला के कलपर जंगल में 16 अप्रैल को हुई पुलिस-नक्सली मुठभेड़ में जवानों ने 29 नक्सलियों को मार गिराया था. इस मुठभेड़ के बाद नक्सली बौखलाए हुए हैं, इसके विरोध में आज बंद का आह्वान किया है. इसका थोड़ा असर कांकेर जिले के कुछ इलाकों में दिख रहा है. वहीं प्रशासन सुरक्षा को लेकर पूरी तरह से तैयार है. सभी पुलिस चौकियों को अलर्ट कर लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। जानकारी के मुताबिक, पखांजूर बांदे से भानुप्रतापपुर तक आवागमन बंद है. इस मार्ग पर यात्री वाहन नहीं चल रहे हैं. हालांकि, वाहनों को चुनाव आयोग द्वारा अधिग्रहित करने के बाद पिछले दो दिनों से यात्री वाहनों की सड़क पर कमी थी पर आज पूरी तरह से यात्री वाहनों का चलना बंद है. दुर्गुकोंदल,बड़गांव जैसे क्षेत्र में बाजार अभी तक नहीं खुले हैं. इस क्षेत्र में संचालित होने वाली लौह अयस्क की खदानें में भी कार्य बंद कर दिया गया है. इससे कहा जा सकता है कि बंद का असर देखा जा रहा है. वहीं भानुप्रतापपुर का बाजार खुला हुआ है और आवागमन सामान्य दिनों की तरह चालू है. अंतागढ़ के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जयप्रकाश बढ़ाई ने बताया कि सुरक्षा के तमाम इंतजाम किए गए हैं और सभी थाना चौकी को अलर्ट किया गया है।

गलती से चली गोली, डीआरजी जवान की मौत

दंतेवाड़ा-रायपुर (विसं)। दंतेवाड़ा-नारायणपुर के सीमावर्ती इलाके में नक्सल गश्त सर्चिंग के दौरान दुर्घटनावश गोली चलने से डीआरजी दंतेवाड़ा के 1 जवान की मौत हो गयी, जबकि 1 जवान घायल हो गया। जानकारी के मुताबिक दंतेवाड़ा जिले के, थाना बारसूर क्षेत्रान्तर्गत हांदावाडा, हितावड़ा क्षेत्र में सशस्त्र माओवादियों की उपस्थिति की सूचना पर दिनांक 24 अप्रैल को दंतेवाड़ा एवं नारायणपुर के सीमावर्ती क्षेत्र में डीआरजी एवं बस्तर फाइटर्स दंतेवाड़ा की संयुक्त टीम नक्सल गश्त सर्चिंग अभियान में निकली थी।

भाठागांव बस स्टैंड से दौड़ेगी 21 ई-बसें जल्द, अब पासपोर्ट की तर्ज पर बनेगा ड्राइविंग लाइसेंस

परिवहन सचिव एस. प्रकाश, परिवहन अपर आयुक्त डी. रविशंकर ने किया भाठागांव बस स्टैंड व पंडरी बस स्टैंड व सिटी सेंटर के केंद्र का किया निरीक्षण

आम नागरिकों से ड्राइविंग लाइसेंस प्रक्रिया के बारे में की बातचीत

रायपुर (विश्व परिवार)। परिवहन सचिव एस. प्रकाश, अपर परिवहन आयुक्त श्री डी. रविशंकर, उप परिवहन आयुक्त श्री मनोज धुव ने आज भाठागांव अंतर्राज्जीय बस स्टैंड का निरीक्षण किया। बस स्टैंड से 21 ई-बसों का संचालन किया जाएगा। जिसके लिए ढ़ाई एकड़ जमीन का चिंहाकन किया गया है। उक्त जमीन का परिवहन सचिव व अपर परिवहन आयुक्त ने अवलोकन किया और नगर निगम व विद्युत विभाग को मूलभूत अधोसंरचनाएं विकसित करने के निर्देश दिए। नगर निगम से एनओसी के लिए आरटीओ रायपुर को निर्देश दिए गए। साथ ही परिवहन सचिव व अपर परिवहन आयुक्त ने पंडरी के ड्राइविंग लाइसेंस सेंटर का निरीक्षण किया। पंडरी के ड्राइविंग लाइसेंस सेंटर में लाइसेंस बनाने की प्रक्रिया का अवलोकन किया। आम नागरिकों से लाइसेंस बनाने के प्रक्रिया के बारे में बातचीत की। प्रक्रिया पर संतुष्टि जाहिर की। उन्होंने ड्राइविंग लाइसेंस टेस्ट ड्राइविंग प्रशिक्षण कार्य को देखा। इसके साथ ही सिटी सेंटर के केंद्र का निरीक्षण कर लाइसेंस मुद्रण कार्य की जानकारी ली। निर्धारित समय-सीमा में वाहन चालकों तक आरसी और ड्राइविंग लाइसेंस पहुंच जाए, यह सुनिश्चित की जाए। अब ड्राइविंग लाइसेंस भी पासपोर्ट की तर्ज बनाया जाएगा। इसकी प्रक्रिया भी शुरू की जाएगी। सिंगल विंडो के माध्यम से ड्राइविंग लाइसेंस बनाया जाएगा, ताकि जल्द से जल्द लाइसेंस पहुंच जाए। आम जनता को किसी प्रकार की ड्राइविंग लाइसेंस बनाने के दौरान परेशानी न हो, इसका भी ध्यान रखा जाए। इस अवसर पर रायपुर आरटीओ श्री आशीष देवांगन व एआरटीओ श्री प्रतीक शुक्ला सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

एक सूरज जो सितारा बन गया- संदर्भ समाधि विद्यासागर जी

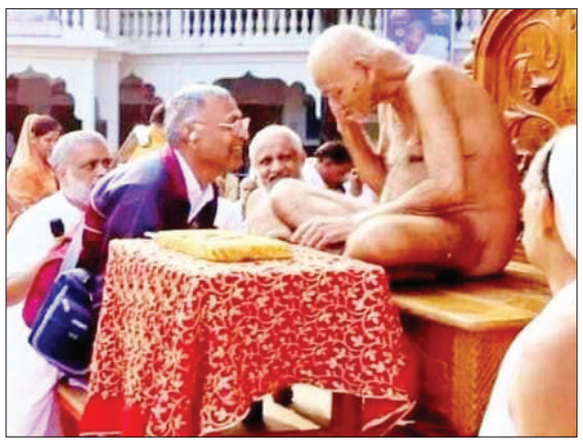

सागर (विश्व परिवार)। अनादिकाल से सूरज प्रतिदिन नियत समय पर अपनी ऊर्जा व ऊष्मा से हमें भरता है और अंधेरा खत्म करके दुनिया में उजाला लाता है। कहते हैं बाँटने पर भी सूरज की ऊर्जा कम नहीं होती। बस ऐसे ही सूरज हैं, आचार्य विद्यासागर जी। जिनका जीवन काल हमारे लिये सूरज की सी ऊर्जा बिखेरता रहता था। हमें बिन मेहनत बड़ी ही सहजता से ज्ञान की विद्या का उजाला मिलता था।

खगोलविद् बताते है कि सितारे भी अपने सूरज की तरह विशाल व ऊष्मा से भरे हुये रहते हैं। लेकिन वे हमसे इतनी दूर रहते हैं कि जब हमारे सामने अंधेरा आता है, तो आसमान की ओर नजर उठाने पर ही उनकी झिलमिलाती दिलखुश चमक हमें नजर आती है। आचार्य विद्यासागर जी अब एक ऐसे ही सितारा बन गये हैं, जिनकी खुशनुमा रौशनी हमें अंधेरे की बीच सर उठाने का श्रम करने पर ही मिल सकेगी।

हमारा एक सूरज बस अब एक सितारा बन गया है। जिन्दगी जीने का अंदाज हमें दिखा व सिखा गया। जिन्दा रहने का तरीका और मौत का सफर कैसे सहजता से किया जाता है ? इस सवाल का जबाब खुद ही दिखा-सिखा गया और मरने की कला एवं भयहीन मृत्यु को अपने आगोश में समाने का बेमिसाल हुनर भी हमको दिखा-सिखा गया।

अरबों खरबों की दौलत पास होना समृद्धी व शान्ति दायक हो ऐसा जरूरी नहीं। अपेक्षाकृत एक फकीर के पास शान्ति व सुकून का खजाना बेहद हो सकता है। गुरूवर से हमने यह भी सीखा कि हमारे पास जो है, उसमें ही संतुष्ट रहना ही बेहतर जीवन यात्रा का प्रतीक है। हम इस जहाँ में पाने नहीं खोने आये हैं। हर अहितकारी सोच-समझ को खोना ही बेहतर रास्ता है।

संतोष में ही परम सुख है। हमेशा खुश रहना चाहिए, ये सोचकर कि दुनिया में हम से भी ज्यादा परेशान और लोग भी हैं। जो काम खुद को सुकून न दे वो कभी नहीं करना चाहिये।

मौत सिर्फ जिस्म छीन सकती है। गुरूवर कहीं नहीं गये हमारे दिलों में अमर हैं। हर पल अपने अँदर झाँकते रहिये। आत्मावलोकन करते रहें। गुरू जी का भौतिक शरीर अब हमारे सामने भले ही न हो पर उनकी बताई राह पर चलकर हम बेहतर जीवन जी सकते हैं। किसी शायर ने कहा है-

सारा आलम 'गौस-बर-आवाज' है...
आज जाने किन हाथों में दिल का साज है,
छुप गया वो साजे हस्ती छेड़ के
अब तो बस आवाज ही आवाज है।।

आचार्य गुरूवर के इन अल्फाजों के अनुरूप ही, इस शाब्दिक अभिव्यक्ति को समझने की गुजारिश है- '' शब्द अर्थ नहीं वह तो अर्थ की ओर ले जाने वाला संकेत मात्र है''।

-मु. शफीक खान

पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष विजय गोयल ने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात

छत्तीसगढ़ आगमन पर स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट पर की मुलाकात

लोकसभा चुनाव में तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने की अग्रिम शुभकामनाएं दी

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। लोकसभा चुनाव के लिए भाजपा प्रत्याशियों का प्रचार करने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पिछले दिनों छत्तीसगढ़ के दो दिवसीय दौरे पर रहे। इसी के तहत छत्तीसगढ़ आगमन पर प्रधानमंत्री मोदी का स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट माना के विमानतल पर पूर्व पालिका अध्यक्ष विजय गोयल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत करते हुए उन्हें तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने की अग्रिम शुभकामनाएं दी। इस दौरान गोयल ने प्रधानमंत्री मोदी की सतत काम करने की अभूतपूर्व ऊर्जा का राज जानने की जिज्ञासा व्यक्त की, जिस पर प्रधानमंत्री मोदी ने मुस्कुराते हुए कहा कि उन्हें खुद यह नहीं पता कि इसका राज क्या है। प्रधानमंत्री मोदी से इस क्षणिक मुलाकात और संवाद पर गोयल ने बताया कि जिस शख्स का आज पूरी दुनिया में डंका बज रहा हो और जिसे दुनिया के कई राष्ट्र प्रमुख यूनिवर्सल बॉस की संज्ञा दे रहे हों, अगर उस शख्स से कभी मिलने का आपको सौभाग्य प्राप्त हो रहो तो, उस शख्स से मिलने के पहले मन में कई तरह की आशंकाएं उठने लगती हैं। कुछ ऐसी ही आशंकाएं मेरी भी थीं, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने इस क्षणिक मुलाकात के दौरान एक बार भी उन्हें ऐसा एहसास होने नहीं दिया कि उनका कद कितना विराट है। वे मुझ सहित विमानतल पर मौजूद प्रत्येक स्वगतकर्ता से पूरी सरलता से ऐसे मिले, जैसे हम सब उनके पारिवारिक सदस्य हों, वैसे भी प्रधानमंत्री मोदी बार-बार कहते आए हैं कि प्रत्येक भारतवासी उनका परिवार है। प्रधानमंत्री मोदी से मिलना, संवाद करना और उनका सरल व्यवहार, मेरे लिए मेरे जीवन का सबसे अमूल्य क्षण रहेगा। गोयल ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री मोदी से मिलकर उन्हें इस बात का एहसास हो गया कि वाकई में अगर कोई शख्स, ईमानदारी और निष्ठा से देश और देशवासियों के हित में काम करने का जज्बा रखता है, तो 24 घंटे काम करने के बाद भी निश्चित तौर पर उसे थकान हरा नहीं सकती। मुझे इस बात पर जीवन भर गर्व रहेगा कि ऐसे महामानव से मैंने जीवन में कभी मुलाकात की थी।

किसान कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने दिया इस्तीफा

रायपुर (आरएनएस)। किसान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राम विलास साहू ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपने इस्तीफा पत्र में लिखा, कांग्रेस पार्टी की स्थापना जिस मूल्यों के आधार पर हुई हैं, आज कांग्रेस पार्टी उससे पुरी तरीके से भटक चुकी हैं। जिसका सबसे बड़ा प्रमाण हैं इस देश के बहु संख्यक हिन्दुओं की भावनाओं को कुचलक हम सब के आराध्य भगवान राम जी की जन्म स्थलीय अयोध्या में उसके मूर्ति के स्थापना के आमंत्रण को ठुकरा देना, देश की एकता को तार तार करने वोले कश्मीर में लगाए गए धारा 370 के खत्म होने का विरोध करना, अल्पसंख्यक को खुश करने के लिए बहुसंख्यक हिन्दुओं को अपमानित करना उसके अलावा वोटों की राजनीति के लिए किसानों की हितों की बात करना पर जमीनी धरातल पर प्रदेश से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक किसानों एवं किसान कांग्रेस के पदाधिकारियों की उपेक्षा इन सारी बातों के कारण मैंने किसान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष एवं कांग्रेस पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा देने का फैसला लिया हैं।

संजय जैन बड़जात्या कामां अपनाघर सेवा संस्थान के क्षेत्रीय अध्यक्ष बने

भरतपुर (विश्व परिवार)। मानव सेवा में समर्पित, असहाय, निराश्रित एवं मंदबुद्धि लोगों के पुनर्वास में संलग्न सबसे बड़ी सामाजिक संस्था मां माधुरी ब्रज वारिश सेवा सदन अपनाघर आश्रम भझेरा भरतपुर ने अपनी नवीन कार्यकारिणी में कामां निवासी संजय जैन बड़जात्या को क्षेत्रीय अध्यक्ष नियुक्त कर कामां, डीग, नगर, जनुथर सेवा समितियों का प्रभार सुपुर्द किया है।

अपनाघर सेवा समिति कामां के अध्यक्ष खेमराज मातुकी वालो ने बताया कि संजय जैन बड़जात्या के मनोनयन से सभी पदाधिकारियों में हर्ष व्याप्त है लम्बे समय से बड़जात्या संस्थान से जुड़कर मानव सेवा में सक्रिय योगदान प्रदान कर रहे हैं।उनकी नियुक्ति पर अपनाघर के भावी नवीन अध्यक्ष प्रमोद पुजारी, सूरज गुर्जर कलावटा, हरि कुम्हेरिया, हरप्रसाद नाटाणी, प्रेमचंद शर्मा, सतीश छाबड़ां, तिलक अरोड़ा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, उमाशंकर शर्मा, संजय सर्राफ, सुरेश सोनी, मनोज गंगौरा वाले, सहित भारतीय किसान संघ अध्यक्ष हुकम सिंह यादव, चामड़ मन्दिर समिति अध्यक्ष राधाशरन शर्मा, मोती पुजारी, कवि कैलाश सोनी, रमन आर्य, ब्रजवानी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था के कमल सिंह कमल आदि ने बधाई प्रेषित करते हुए कहा कि जैन का उचित पद पर मनोनयन हुआ है।

शपथ ग्रहण 28 को अपना घर सेवा समिति इकाई कामां की महिला एवं पुरुष इकाई की नवीन कार्यकारिणी द्वारा 28 अप्रैल को कामा के बस स्टैंड स्थित शिव शक्ति तमोलिया भवन में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया जाएगा जिसमें सभी से भाग लेने की अपील की है।

महिला चेंबर एवं न्यूट्रीशिप के तत्वाधान में हेल्दी लाइफ स्टाइल, बॉडी मास इंडेक्स एवं हेल्दी सलाद पर कार्यशाला

डॉ. अरुणा पलटा एवं शिल्पी गोयल मुख्य अतिथि रहे

रायपुर (विश्व परिवार)। महिला चेम्बर प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती मधु अरोरा ने बताया कि महिला चेंबर एवं न्यूट्रीशिप के संयुक्त तत्वाधान में डॉ. अरुणा पलटा एवं शिल्पी गोयल के मुख्य आतिथ्य में आज गुरूवार, दिनांक 25 अप्रेल 2024 को चै. देवीलाल व्यापार उद्योग भवन, बाम्बे मार्केट, रायपुर में हेल्दी लाइफस्टाइल, बॉडी मास चेकअप एवं हेल्दी सलाद पर कार्यशाला रखी गई जहां बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं का बॉडी मास चेकअप किया गया तथा हेल्दी लाइफस्टाइल और हेल्दी सलाद पर आवश्यक जानकारी दी गई।

महिला चेंबर अध्यक्ष श्रीमती मधु अरोरा ने बताया कि आज के समय में कामकाजी महिलाएं हो या हाउसवाइफ हर किसी को एक हेल्दी लाइफ स्टाइल जीने का हक है लेकिन वे अपने काम में हम इतने व्यस्त रहते हैं कि अपने स्वास्थ्य पर ही ध्यान नहीं दे पाते इसीलिए आज चेंबर भवन में महिला चेम्बर द्वारा यह कार्यशाला आयोजित की गई है ताकि महिलाओं को हम जागरुक कर सकें कि आज के इस व्यस्ततम जीवन शैली में अपने खान-पान और अपनी आदतों में थोड़ा सा बदलाव करके एक सेहतमंद जिंदगी कैसे पा सकते हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. अरुणा पलटा जी ने बॉडी मास चेकअप के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि स्वस्थ इंसान का वजन उसकी लंबाई के हिसाब से होना चाहिए, जिसके लिए मानक निर्धारित है। किसी व्यक्ति की ऊंचाई और वजन का अनुपात बीएमआई यानी बॉडी मास इंडेक्स है। बीएमआई एक ऐसा कैलकुलेशन है, जिसके आधार पर आप यह जान पाते हैं कि आप लंबाई और वजन के हिसाब से संतुलित और स्वस्थ हैं या नहीं। इस बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए कार्यक्रम में उपस्थित महिला सदस्यों का बॉडी मास चेकअप किया गया।

न्यूट्रीशिप की फाउंडर श्रीमती शिल्पी गोयल ने हेल्दी सलाद को आधार बनाकर एक हेल्दी लाइफ स्टाइल कैसे पाएं उसे लेकर जानकारी दी तथा विभिन्न प्रकार के सलाद जो पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं तथा जिन्हें आसानी से घर में बनाया जा सके इस प्रकार के सलाद बनाने के डेमो कार्यक्रम में दिए गए। जैसे-लौकी का बना हुआ पिज्जा, कद्दू का बना हुआ सलाद, जिन्हें वहां उपस्थित महिला सदस्यों ने गंभीरतापूर्वक समझा और सीखा।

कार्यक्रम के अंतर्गत विभा अग्रवाल, गायत्री जोशी, मोनिका जोशी, ऋचा अग्रवाल, वर्षा चैबे, सुधा अग्रवाल, मनीषा रामानी, विनीता शुक्ला, रेखा जीतवानी, वैदेही धवेरी ने स्टाल लगाये। सलाद प्रतियोगिता में प्रियंका वर्मा प्रथम,बीना अरोड़ा द्वितीय के साथ ही सभी को सांत्वना पुरस्कार दिये गये। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर महिला चेम्बर संरक्षक श्रीमती आभा मिश्रा, श्रीमती मधु अरोरा, महामंत्री श्रीमती पिंकी अग्रवाल, श्रीमती प्रेरणा भट्ट, उपाध्यक्ष-श्रीमती ईला गुप्ता, मंत्री-श्रीमती सोमा घोष, मीडिया प्रभारी श्रीमती इंदिरा जैन एवं श्रीमती प्रीति उपाध्याय, ऐश्वर्या तिवारी, श्रीमती प्रीति मिश्रा, शालू चैरे, प्रियंका वर्मा, सरगम अरोड़ा, बीना अरोड़ा, तमन्ना जोशी, प्रिया जोशी, शिखा धुप्पड़, श्वेता व्यास आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थी।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शुक्रवार 26 अप्रैल 2024

संक्षिप्त समाचार

अवैध शराब बेचने व आम जगह पर शराब पीने वाला गिरफ्तार

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। बुधवार को पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा राजनांदगांव एवं नगर पुलिस अधीक्षक पुष्पेन्द्र नायक के मार्गदर्शन में आगामी लोकसभा चुनाव को दृष्टिगत रखते हुए एवं जिले मे चलाये जा रहे अभियान मे अवैध शराब बिक्री करने वालो व आम जगह पर शराब पीने वालो विरुद्ध कार्यवाही हेतु लगातार पेट्रोलिंग व कार्यवाही किया जा रहा है अभियान के तहत बुधवार को चौकी चिखली स्टाफ के टीम बना कर अभियान के दौरान मुखबीर की सूचना पर आरोपी रमेष कुमार पारधी पिता स्व. चुनु लाल पारधी साकिन बोईरडीह पुलिस चौकी चिखली जिला राजनांदगांव को शराब बिक्री करने हेतु रखे एक प्लास्टिक सफेद थैला मे 32 पौवा देशी प्लेन शराब को जप्त किया गया तथा आरोपी के विरूद्ध धारा 34(2)आबकारी अधिनियम कार्यवाही कर न्यायालय समक्ष पेश कर जेल दाखिल किया गया,आरोपी के विरूद्ध पूर्व मे भी आबकारी अधिनियम के प्रकरण पंजीबद्ध है। इसी प्रकार अभियान के तहत् आम जगह पर शराब पीने वाले आरोपी अनिल पारधी पिता झग्गर पारधी उम्र 21 साल साकिन बोईरडीह पुलिस चौकी चिखली के विरूद्ध धारा 36(च) आबकारी अधिनियम के तहत कार्यवाही किया गया।

पुलिस ने की होटलों/लॉजों और ढाबों की जांच

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग के निर्देशन पर अतिरिक्त पुलिस पुलिस अधीक्षक मुकेश ठाकुर एवं अतिरिक्त पुलिस अधिक्षक राहुल देव शर्मा के मार्ग दर्शन में लोकसभा चुनाव को लेकर सभी थानों में चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। चेकिंग के लिय विशेष तौर पर शहर के आउटर में 05 स्थितिक पॉइन्ट लगे है और 01 स्थितिक पॉइन्ट डोंगरगढ़ में लगा है जो अन्यत्र जिला व शहर के अंदर आने वाले वाहनों की गहनता से चंकिग कर रहें हैं। दूसरे जिलों/राज्य से आकर मतदान में गड़बड़ी, उपद्रव करने वालों पर नजर रखने के लिए होटल और ढाबों का चेकिंग अभियान चलाया गया। आदर्श आचार संहिता के तहत लोकसभा क्षेत्र के बाहर का व्यक्ति लोकसभा निर्वाचन के 48 घण्टा पूर्व किसी वैध कारण के बिना जिले में नहीं रहेंगे और चुनाव से संबंधित प्रचार प्रसार नहीं करेंगें इस हेतु राजनांदगांव शहर क्षेत्र के कई होटलों की चेकिंग की गई। चेकिंग के दौरान होटल/लॉज के रजिस्टर को चेक किया गया, बाहर से आकर लोकसभा चुनाव के प्रचार प्रसार में भाग लेने वाले सभी बाहरी लोगों को दिनांक 24.04.2024 के संध्यात 06:00 बजे के पहले वापस जाने को कहा गया साथ ही उनका अन्य दस्तावेजों की जांच की गई, सभी होटल/लॉज संचालकों को निर्देश दिया गया कि बाहर से आकर ठहरने वाले आगंतुकों की आईडी आदि की जांच करें कोई संदिग्ध व्यक्ति मिले तो उसकी सूचना तत्काल पुलिस को दे, अनैतिक कार्य करने वालों पर सख्त कार्यावाही की जायेगी। इसी तरह जिले के समस्त थाना/चौकी प्रभारियों द्वारा अपने-अपने थाना/चौकी क्षेत्रों के ढाबों में पहुंच कर पूछताछ की गई। सभी ढाबों संचालकों को सख्त हिदायत दी है कि होटल में ठहरने वाले प्रत्येक व्यक्तियों की आईडी आदि की जांच करें कोई संदिग्ध व्यक्ति मिले तो उसकी सूचना तत्काल पुलिस को दे।

जिले में मतदाताओं को जागरूक करने पानी के मटके में स्वीप नारा

धमतरी(विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत आगामी 26 अप्रैल को मतदान होगा। इसके मद्देजनर जिले में मतदातओं को जागरूक करने नवाचार किया जा रहा है। विधानसभा क्षेत्र धमतरी के ग्राम मुजगहन में राहगीरों की प्यास बुझाने के लिए लगे मटकों में मतदाता जागरूकता संबंधी नारा-स्लोगन लिखे गये। साथ ही यहां से गुजरने वाले राहगीर, आसपास काम करने वाले मजदूरों को आगामी 26 अप्रैल को अनिवार्य रूप मतदान करने के लिए प्रेरित किया जा रहा तथा शपथ भी दिलाई जा रही। इसके साथ ही जिले के वनांचल नगरी विकासखण्ड स्थित ग्राम मोदे के लीफ आर्टिस्ट एवं युवा कवि ने पीपल के पत्तों पर ग्लोब, भारत के नक्शा पर उंगली के निशान, संसद भवन और हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख इसाई चारों धर्म के व्यक्तियों को दर्शाता पेंटिंग बनाकर मतदाताओं को जागरूक कर रहे हैं। इस अनोखी कलाकारी और मतदाताओं के जागरूकता के लिए की गई उनके हुनर की कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी ने प्रशंसा भी की। गौरतलब है कि कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुश्री नम्रता गांधी के निर्देश एवं सीईओ जिला पंचायत तथा स्वीप जिला नोडल अधिकारी सुश्री रोमा श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में जिले में लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत आगामी 26 अप्रैल को होने वाले मतदान के लिए लोगों को लगातार जागरूक किया जा रहा है।

सावधानी पूर्वक करें ईवीएम मशीनों की कमीशनिंग का कार्य - कलेक्टर

कमीशनिंग हाल से किसी भी तरह के कागज सहित सामान अपने साथ लाना भी वर्जित होगा

रायगढ़(विश्व परिवार)। बुधवार की दोपहर कलेक्टोरेट स्थित सृजन सभाकक्ष में सेक्टर ऑफिसर एवं उनके सहयोगी कर्मचारियों को ईवीएम और वीवीपैट मशीनों के कमीशनिंग का प्रशिक्षण दिया गया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कार्तिकेया गोयल ने कहा कि प्रशिक्षण के दौरान ईवीएम एवं वीवीपैट मशीनों के कमीशनिंग कार्यों को सावधानीपूर्वक करें एवं प्रशिक्षण में किसी भी तरह की शंका होने पर उसे मास्टर्स ट्रेनर्स से पूछकर समाधान करें। कलेक्टर श्री गोयल ने कहा कि मशीनों की कमीशनिंग के दौरान संबंधित हाल में मोबाइल फोन, डिजिटल वॉच सहित किसी भी तरह के इलेक्ट्रानिक गजेट्स ले जाना प्रतिबंधित रहेगा। कमीशनिंग हाल से किसी भी तरह के कागज सहित सामान अपने साथ लाना भी वर्जित होगा। इन बातों का सभी सेक्टर ऑफिसर और उनके सहयोगी कर्मचारी विशेष ध्यान रखेंगे। इस दौरान उन्होंने मशीनों की एसेंबलिंग तकनीक, चालू करने और बंद करने से लेकर सीलिंग सहित विभिन्न पहलुओं की सुक्षमता से प्रशिक्षण लेने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री गोयल ने सभी सेक्टर ऑफिसरों को पूर्व में मशीनों में आए संभावित खराबी और उसके समाधान संबंधित सूची सभी सेक्टर ऑफिसर को उपलब्ध कराने की बात कही। अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री राजीव कुमार पाण्डेय ने ईवीएम और वीवीपैट कमिशनिंग के महत्व एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि 25 अप्रैल को प्रात: 11 बजे से ईवीएम मशीनों दूसरा रेण्डमाइजेशन होगा। इसमें मशीनों को मतदान केंद्रों के अनुसार आबंटन किया जाएगा। इसके बाद 26 अप्रैल प्रात: 10 बजे से विधानसभा रायगढ़, खरसिया, लैलूंगा के लिए ईवीएम एवं वीवीपैट की कमीशनिंग केआईटी कालेज में और धरमजयगढ़ विधानसभा का जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) धरमजयगढ़ में ईवीएम मशीनों की कमीशनिंग होगी। इस दौरान उन्होंने सभी सेक्टर ऑफिसर्स को प्रात: 9 बजे तक यथास्थिति केआईटी एवं डाइड धरमजयगढ़ में पहुंचने के निर्देश दिए। कमीशनिंग में किसी भी तरह की लापरवाही होने से सेक्टर ऑफिसर्स के साथ मतदान दलों को परेशानी होगी। किसी भी तरह की गलतियां न हो इसके लिए उन्होंने प्रशिक्षण को अच्छी तरह से आत्मसात करें और मशीनों को चालू करने बंद करने, कनेक्ट करने, सिलिंग करने से लेकर एड्रेस टैग लगाने संबंधित छोटी सी छोटी बातों को ध्यान दे और अपनी डायरी में नोट करें। प्रशिक्षण के दौरान बैलेट यूनिट को खोलने, मतपत्र सेट करने, सिलिंग करने, वीवीपैट में पेपर रोल लगाने, बैटरी लगाने, कंट्रोल यूनिट से बैलेट यूनिट और वीवीपैट को कलेक्ट करने, बीयू की थम सील को 01 पर रखने, बैलेट यूनिट पर पींक सील लगाने, वीवीपैट के लाक और अनलॉक की श्रेणी पर ध्यान देने संबंधित ईवीएम व वीवीपैट मशीन के संपूर्ण प्रक्रियाओं की जानकारी पावर पाइंट प्रजेन्टेशन और वीडियो के माध्यम से जिला मास्टर ट्रेनर श्री राजेश डेनियल एवं श्री विकास रंजन सिन्हा द्वारा दी गई।

प्रेक्षक ने किया मतदान केन्द्रों का निरीक्षण

कोरबा(विश्व परिवार)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा कोरबा जिले के लिए नियुक्त सामान्य प्रेक्षक आई.ए.एस. श्री प्रेम सिंह मीणा ने आज रामपुर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न मतदान केन्द्रों का निरीक्षण कर मतदान केंद्रों की सुविधाओं एवं आवश्यक व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। इस दौरान अपर कलेक्टर श्री दिनेश कुमार नाग एवं तहसीलदार श्री के. के. लहरे सहित संबंधित विधानसभा के सहायक रिटर्निंग अधिकारी, बूथ लेबल अधिकारी उपस्थित थे। प्रेक्षक श्री मीणा ने रामपुर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम कोरकोमा के मतदान केंद्र क्रमांक 92, 94, ग्राम पसरखेत के मतदान केंद्र क्रमांक 97, ग्राम कोलगा के मतदान केंद्र क्रमांक 40, ग्राम बासीन के मतदान केंद्र क्रमांक 37, ग्राम बरपाली के मतदान केंद्र क्रमांक 35, 36, ग्राम जिल्गा के मतदान केंद्र क्रमांक 105, 106, ग्राम कुदमुरा के मतदान केंद्र क्रमांक 107, 108, ग्राम तौलीपाली के मतदान केंद्र क्रमांक 103, ग्राम करतला के मतदान केंद्र क्रमांक 114, 115, ग्राम कोटमेर के मतदान केंद्र क्रमांक 117, ग्राम नोनबिर्रा के मतदान केंद्र क्रमांक 250, 251, ग्राम भैंसमा के मतदान केंद्र क्रमांक 127, 128, 129, ग्राम करमंदी के मतदान केंद्र क्रमांक 82, ग्राम गोढ़ी के मतदान केंद्र क्रमांक 83, 84 का अवलोकन किया। प्रेक्षक ने मतदान केन्द्रों में मतदाताओं की जानकारी हेतु किए गये दीवार लेखन, दिव्यांग मतदाताओं हेतु बनाये गये रैम्प, शौचालय, पेयजल व्यवस्था सहित अन्य सुविधाओं का निरीक्षण कर केन्द्रों में आवश्यकतानुसार सुविधाएं उपलब्ध कराने के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए।

संपत्ति विरूपण में प्रत्याशी नहीं मिटाएं तो, वह प्रत्याशी के खर्च में शामिल होगा : सामान्य प्रेक्षक

सारंगढ़ बिलाईगढ़,(विश्व परिवार)। जांजगीर लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सामान्य प्रेक्षक सौरभ स्वामी सारंगढ़ के दौरे पर रहे। सामान्य प्रेक्षक स्वामी ने कलेक्टर धर्मेश कुमार साहू, एसपी पुष्कर शर्मा, सहायक रिटर्निंग अधिकारी द्वय वासु जैन, डॉ. स्निग्धा तिवारी, उप जिला निर्वाचन अधिकारी अनिकेत साहू ,डिप्टी कलेक्टर वर्षा बंसल से कलेक्टर कक्ष में मुलाकात किया। सामान्य प्रेक्षक सौरभ स्वामी ने कहा कि जहां-जहां एसएसटी, वीएसटी, एफएसटी आदि पाली-पाली से ड्यूटी कर रहें हैं वे ड्यूटी के शुरूआत और अंतिम समय अपना सामूहिक फोटो शेयर नियंत्रण अधिकारियों को दें। उन्होंने कहा कि सभी का पाली-पाली अनुसार ही ड्यूटी होना चाहिए। सामान्य प्रेक्षक सौरभ स्वामी ने रिटर्निंग अधिकारी वासु जैन को कहा कि जिले में संपत्ति विरूपण अंतर्गत दीवालों पर 3 बाई 2 के साइज का पेंटिंग और 1 बाइ 2 साइज का झंडा सहमति से है तब ठीक है। उल्लंघन के मामले में प्रत्याशी को नोटिस दें कि वे या तो खुद निर्धारित स्थान से स्वयं मिटा दे, नहीं तो निर्वाचन कार्यालय से मिटाने पर प्रत्याशी के खाते में खर्च जुड़ेगा। इसी प्रकार स्वामी ने कहा कि ग्राम पंचायत और शहर के वार्ड स्तर से आदर्श आचरण संहिता मुक्त क्षेत्र का एनओसी प्राप्त करें और कहीं कोई आदर्श आचरण संहिता का उल्लंघन हो तो कार्यवाही करें। बैठक में जिले के कुल जनसंख्या, महिला-पुरूष मतदाता, दिव्यांग का होम वोटिंग, डाकमत से वोटिंग, मतदान केन्द्रों में बुनियादी सुविधाओं की स्थिति, मतदान दल, जांच चौकियों में ड्यूटी, मतदान दल की रवानगी, वापसी, सामग्री संग्रहण, एमसीएमसी, आदर्श आचरण संहिता आदि के संबंध में समीक्षा की। उल्लेखनीय है कि सामान्य प्रेक्षक सौरभ स्वामी राजस्थान कैडर के 2015 बैच के आईएएस हैं।

आग पर नियंत्रण पाने के लिए ज्वलनशील पदार्थों का जरूरी है आइसोलेशनः एसके बंजारा

कोरबा(विश्व परिवार)। आग पर नियंत्रण पाने के लिए घटनास्थल की सटीक सूचना देना सबसे जरूरी है। इसके साथ ही वहां आगजनी से होने वाले अधिक नुकसान से बचने के लिए ज्वलनशील पदार्थों को अलग कर हटाना आवश्यक है। यह विचार कार्यपालक निदेशक एसके बंजारा ने राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह के समापन समारोह में व्यक्त किए। अटल बिहारी वाजपेयी ताप विद्युत संयंत्र (एबीवीटीपीएस) मड़वा में 15 से 22 अप्रैल 2024 तक राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह मनाया गया। समापन समारोह में मुख्य अग्निशमन अधिकारी एमके रायकवार ने पूरे सप्ताह हुए कार्यक्रमों को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समक्ष रखा। उन्होंने बताया कि इस वर्ष राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह की थीम- 'अग्नि सुरक्षा सुनिश्चित करें, राष्ट्रीय निर्माण में योगदान दें' रखी गई है। पूरे सप्ताह प्राथमिक अग्निशामक यंत्रों का प्रशिक्षण एवं प्रचालन विधि अधिकारी, कर्मचारी एवं श्रमिकों को बताया गया। इसके साथ ही जनजागरूकता के लिए नारा एवं निबंध प्रतियोगिता भी रखी गई। प्रतिभागी विजेताओं को कार्यपालक निदेशक एवं अतिथियों के हाथों पुरस्कृत किया गया। इनमें ओमप्रकाश मिश्रा, अमित सिंह राठौर, सतीश यादव शामिल हैं। कार्यक्रम को अतिरिक्त मुख्य अभियंता आरके साव एवं एन.लकरा ने भी संबोधित किया।

प्रत्येक वोट महत्वपूर्ण गंभीरता से ले ट्रेनिंग-कलेक्टर

होम वोटिंग की हर प्रक्रिया से कराया अवगत, कहा डाउट होने पर तत्काल प्रश्न पूछे

रायगढ़(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री कार्तिकेया गोयल की उपस्थिति में आज कलेक्टोरेट के सृजन सभा कक्ष में होम वोटिंग के संबंध में माइक्रो आब्जर्वर एवं मतदान दलों को ट्रेनिंग दिया गया। इस अवसर पर अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी राजीव कुमार पाण्डेय, सहायक रिटर्निंग ऑफिसर प्रवीण तिवारी, डिप्टी कलेक्टर एवं नोडल पोस्टल बैलेट श्री महेश शर्मा, डिप्टी कलेक्टर शशिकांत कुर्रे, डिप्टी कलेक्टर समीर बड़ा एवं निर्वाचन कार्य में संलग्न आधिकारी उपस्थित रहे। प्रशिक्षण में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी कार्तिकेया ने कहा कि विधानसभा निर्वाचन की अपेक्षा लोक सभा निर्वाचन में होम वोटिंग करने वाले मतदाताओं की संख्या कम है, लेकिन हर वोट महत्वपूर्ण होता है। वर्तमान में 85 वर्ष से अधिक आयु वर्ग वाले बुजुर्ग एवं 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता वाले मतदाताओं से हमें शत-प्रतिशत वोटिंग करवाना है। इसके साथ ही निर्वाचन में संलग्न टीम की वोटिंग की गोपनीयता को बनाए रखना एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है, ध्यान रखें कि जिस स्थान को वोटिंग हेतु निर्धारित की जा रही है वहां सीसी टीवी कैमरा, मोबाइल आदि न हो। इसलिए सभी प्रक्रियाओं की अच्छी तरह से जानकारी ले। होम वोटिंग के पूर्व से बीएलओ से समन्वय बनाए रखे ताकि वोटिंग में किसी प्रकार की समस्या न हो। अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री राजीव कुमार पाण्डेय ने वोटिंग की विभिन्न महत्वपूर्ण प्रक्रिया से अवगत कराया। उन्होंने निर्वाचन आयोग द्वारा डाकमत पत्र से संबंधित वरिष्ठ नागरिक, दिव्यांग व्यक्ति को दी जाने वाली सुविधा के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि 85 वर्ष से अधिक आयु वर्ग को शामिल किया गया। इसी प्रकार 40 प्रतिशत दिव्यांग व्यक्ति जिसके पास सक्षम अधिकारी द्वारा दिव्यांगता प्रमाण पत्र हो तथा जिनके द्वारा नियत समयावधि के भीतर प्रारूप 12 घ में आवेदन किया गया है, उन्हें होम वोटिंग की सुविधा दी जा रही है। साथ ही अनिवार्य सेवाओं के अंर्तगत आने वाले व्यक्ति को मतदान दिवस के दिन अपने कर्तव्य संलग्नता के कारण मतदान केंद्र पर मतदान करने में सक्षम नहीं है, वे डाकमत पत्र के माध्यम से बनाए गए सुविधा केंद्र में जाकर मतदान करेंगे। उन्होंने बताया की टीम में मतदान दल में दो मतदान आधिकारी, एक माइक्रो आब्जर्वर के साथ सुरक्षा बल रहेंगे।

आम जनता महंगाई और शिक्षित युवा बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं: ज्योत्सना

05 साल के लिए कांग्रेस को मौका दें जनता, फर्क दिखेगा

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा लोकसभा की सांसद व प्रत्याशी ज्योत्सना चरणदास महंत ने संसदीय क्षेत्र के विभिन्न गांवों का दौरा व जनसंपर्क कर कांग्रेस के न्याय पत्र की खूबियों को बताया। अगले 5 साल कांग्रेस की सरकार चुनकर देने का आह्वान आम जनता से करते हुए सांसद ने कहा कि 10 साल तक भाजपा की सरकार ने बड़े-बड़े वादे किए लेकिन पूरा एक भी नहीं हुआ। महंगाई चरमसीमा पर है, भ्रष्टाचार बढ़ें हैं और बेरोजगारी की मार हर पढ़ा-लिखा युवा झेल रहा है। रामपुर विधानसभा क्षेत्र के ग्राम घिनारा, नवापारा, घरीपखना, केराकछार, जूनापारा आदि गांवों में सांसद ने उपस्थित ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस ने किसान, मजदूर, महिला, बेरोजगारों को न्याय देने के लिए न्याय पत्र तैयार किया है। देशभर के मनरेगा मजदूरों को 400 रुपए मजदूरी के साथ जीवन बीमा का भी लाभ दिया जाएगा। किसानों को कर्ज माफी के साथ-साथ जीएसटी मुक्त खरीदारी का लाभ मिलेगा और प्राकृतिक आपदा से फसल की नुकसानी पर 30 दिन के भीतर मुआवजा देंगे। महिलाओं को सम्मान स्वरूप हर साल 1 लाख रुपए और 5 साल में 5 लाख देने का वादा हमने किया है जो सरकार बनते ही पूरा किया जाएगा जिससे महिलाओं का आर्थिक स्वालंबन होगा और वे एक बड़ी बचत भी कर सकेंगी। सांसद ने कहा कि जनता महंगाई, बेरोजगारी से त्रस्त है। कांग्रेस के घोषणा पत्र में युवाओं को 30 लाख नौकरियां दी जाएंगी जिसमें अकेले छत्तीसगढ़ में ही 1 लाख नौकरी मिलेगी। पढ़े-लिखे युवाओं को उद्योग के लिए भी रुपए दिए जाएंगे और उन्हें प्रशिक्षण भी मिलेगा। किसानों के लिए एमएसपी की गारंटी, जातिगत जनगणना, इसके आधार पर आरक्षण, आरक्षण से 50 प्रतिशत की सीमा हटाने, अग्निवीर योजना बंद करने का वादा किया गया है। जनसंपर्क के दौरान बड़ी संख्या में स्थानीय कांग्रेस पदाधिकारी व कार्यकर्तागण भी उपस्थित रहे।

साप्ताहिक बाजार में शत-प्रतिशत वोट करने का किया आग्रह

कांकेर(विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अभिजीत सिंह के निर्देश पर और जिला पंचायत के सीईओ एवं स्वीप के नोडल अधिकारी श्री सुमित अग्रवाल के मार्गदर्शन में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत जिले के मतदाताओं को शत-प्रतिशत मतदान के लिए जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में आज साप्ताहिक बाजार कांकेर में बी.एड कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा स्वीप नोडल के द्वारा मतदाताओं को शत-प्रतिशत वोट करने 'जागरूक रहेगा कांकेर-मतदान करेगा कांकेर' का नारा लगाते हुए नागरिकों, राहगीरों व सभी दुकानों में जाकर मतदान करने का आग्रह किया गया। इस दौरान मौजूद लोगों को मतदाता शपथ भी दिलाई गई।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शुक्रवार 26 अप्रैल 2024

व्यापार समाचार

कारोबारी गतिविधियां अप्रैल में 14 साल के शीर्ष पर, नौकरियों में वृद्धि को मिला समर्थन

नई दिल्ली(एजेंसी)। मजबूत मांग के कारण देश की कारोबारी गतिविधियां अप्रैल में लगभग 14 वर्षों के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। यह मजबूत आर्थिक विकास का संकेत है। एचएसबीसी का खरीद प्रबंधक सूचकांक यानी पीएमआई अप्रैल में बढ़कर 62.2 हो गया। मार्च में यह 61.8 पर था। पीएमआई से पता चलता है कि विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में विस्तार का संकेत है। महंगाई में कमी के बावजूद रेपो दर में कटौती में देरी हो सकती है क्योंकि महंगाई में आगे बहुत गिरावट की संभावना नहीं है। सर्वेक्षण में कहा गया है कि पिछली कुछ तिमाहियों में मजबूत विस्तार के बाद इस साल भारत सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बने रहने के लिए अच्छी स्थिति में है। अगस्त 2021 से पीएमआई 50 से ऊपर रहा है। 50 से ऊपर का मतलब कारोबारी गतिविधियों में तेजी और इससे कम का मतलब कमजोरी है। एचएसबीसी के भारत में मुख्य अर्थशास्त्री प्रांजुल भंडारी ने कहा, नए ऑर्डरों में बढ़ोतरी से विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में मजबूत प्रदर्शन दिखा है। बढ़ती मांग को पूरा करने के प्रयासों से नौकरियों में वृद्धि को समर्थन मिला, जो विनिर्माण क्षेत्र में सबसे अधिक था। यह डेढ़ साल में सबसे तेज गति से बढ़ी। हालांकि मांग की मजबूती से खर्चों का भार ग्राहकों पर डाल दिया गया। सर्वे के अनुसार, महंगाई इतनी तेजी से नहीं गिर सकती कि आरबीआई किसी भी समय दर में कटौती पर विचार करना शुरू कर दे।

12 वर्ष से कम के बच्चों को माता पिता के पास दी जाए सीट

नई दिल्ली(एजेंसी)। डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन ने सभी एयरलाइंस से यह सुनिश्चित करने को कहा है कि 12 साल तक की उम्र के बच्चों को फ्लाइट में उनके माता-पिता या अभिभावकों में से कम से कम एक के साथ सीट दी जाए। बता दें, डीजीसीए द्वारा ये कदम उस शिकायत के बाद उठाया गया है। जब एक बच्चे को उसके माता-पिता के साथ बैठने नहीं दिया गया था। डीजीसीए ने कहा कि एयरलाइंस यह सुनिश्चित करेगी कि 12 साल तक के बच्चों को उनके माता-पिता/अभिभावकों में से कम से कम एक के साथ सीटें आवंटित की जाएं, जो एक ही पीएनआर पर यात्रा कर रहे हों और इसका रिकॉर्ड रखा जाएगा। एयरलाइंस बच्चे की सीट के लिए अभिभावक को फोर्स नहीं कर सकती है। अगर पेरेंट्स ने अपने लिए फ्री सीट या ऑटो एलोकेशन का ऑप्शन चुना है तो बगल की सीट बच्चे के लिए अरेंज करना होगा। इसके अलावा डीजीसीए की ओर से एयरलाइंस को जीरो बैगेज, पसंदीदा सीट शेयरिंग, मील, ड्रिंक और संगीत वाद्ययंत्र ले जाने की अनुमति दे दी है। इसके लिए एयर ट्रांसपोर्ट सर्कुलर 01 2024 में बदलाव भी किया गया है। डीजीसीए की ओर से स्पष्ट किया गया है कि ये सुविधाएं ऑप्ट इन यानी आपकी मर्जी के आधार पर है। ये बिल्कुल भी अनिवार्य नहीं है। यात्रियों के लिए ऑटो सीट की भी सुविधा होती है, जिसमें आप आपको कंपनी अपने आप ही सीट दे देती है। ऐसे में वो सभी यात्री जिन्होंने वेब चेक इन के दौरान सीट नहीं ली होगी। उन्हें एयरलाइन द्वारा ऑटोमेटिक सीट आवंटित कर दी जाएगी।

गर्मी में चुनावों के कारण इस साल चीनी की रिकॉर्ड खपत, गन्ना किसानों को समय पर मिल सकता है भुगतान

नई दिल्ली(एजेंसी)। भीषण गर्मी के बीच हो रहे लोकसभा चुनावों की वजह से देश में इस साल चीनी की खपत बढ़कर रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच सकती है। अधिक खपत से न सिर्फ चीनी उत्पादक कंपनियों का मार्जिन बढ़ेगा बल्कि गन्ना किसानों को समय पर भुगतान करने में मदद मिलेगी। हालांकि, चीनी की मांग बढ़ने से घरेलू बाजार में इसकी कीमतें बढ़ सकती हैं। नेशनल फेडरेशन ऑफ कोऑपरेटिव शुगर फैक्ट्रीज लि. के प्रबंध निदेशक प्रकाश नाइकनवरे ने कहा, गर्मी के बीच हो रहे लोकसभा चुनावों की वजह से चीनी की मांग में असामान्य वृद्धि देखने को मिल रही है। इससे इस साल चीनी की कुल खपत बढ़कर रिकॉर्ड 2.9 करोड़ टन पहुंच सकती है। 30 सितंबर को समाप्त विपणन वर्ष 2022-23 में कुल खपत 2.78 करोड़ टन रही थी। बलरामपुर चीनी मिल्स की कार्यकारी निदेशक अवंतिका सरावगी ने कहा, देश के कई हिस्सों में अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक पहुंच गया है। इस बीच हो रही सियासी रैलियों में लाखों की भीड़ जुटने से आइसक्रीम और शीतल पेय की खपत बढ़ गई है, जिससे चीनी की मांग औसत से ज्यादा है। मुंबई स्थित एक डीलर ने बताया, मार्च के मध्य से जून तक गर्मी के महीनों में कोल्ड ड्रिंक और आइसक्रीम की मांग बढ़ जाती है।

भारत कहां, कैसे, कब और किसके साथ यात्रा करता है पर प्रकाश डालती

गुरुग्राम। बैकपैकर से लेकर बॉन-विवांट्स तक - और इनके बीच का सब कुछ - भारतीय यात्री घरेलू पर्यटन को नए तरीके से परिभाषित करने के साथ-साथ दुनिया के हर हिस्सेम में पहुंचकर अंतरराष्ट्रीय यात्रा के विस्ताकर में जोरदार भूमिका निभा रहे हैं। अपने 10 करोड़ से अधिक वार्षिक एक्टिव यूजर्स के यात्रा अनुभवों की जानकारी जुटाकर, MakeMyTrip ने अपनी इंडिया ट्रैवल ट्रेंड्स रिपोर्ट के पहले संस्करण में भारतीय यात्रियों के कुछ चुनिंदा अनुभवों को संजोने का प्रयास किया है। इस रिपोर्ट में भारत कहां, कब और कैसे यात्रा करता है, राष्ट्री य और क्षेत्र-वार नजरिये से लाखों यात्राओं के टॉप ट्रेंड्स शामिल किए गए हैं। MakeMyTrip के सह-संस्थापक और ग्रुप सीईओ, राजेश मगो ने कहा, घरेलू और अंतर्राष्ट्री य क्षितिज पर भावी पर्यटन की रुपरेखा तैयार करने में मदद करने के लिए, पहले हमें भारतीय यात्रियों के बदलते यात्रा व्यवहार को समझना होगा। MakeMyTrip की इंडिया ट्रैवल ट्रेंड्स रिपोर्ट कुछ नवीनतम और महत्वापूर्ण ट्रेंड्स को रेखांकित करती है। भारत दिनों-दिन पर्यटन के क्षेत्र में एक मजबूत ताकत के रूप में उभर रहा है, ये जानकारी यात्रा और आतिथ्य क्षेत्र में मांग और आपूर्ति के अंतर को कम करने में मदद कर सकती है। इसका मतलब है नीतियां तैयार करना, गंतव्यों की पहचान करना और ऐसे अनुभव बनाना जो यात्रियों की अनूठी यात्रा पसंदों और आकांक्षाओं के अनुरूप हों।

लखनऊ ने चेन्नई को उसके घर पर 6 विकेट से हराया

चेन्नई(एजेंसी)। केएल राहुल की कप्तानी वाली लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम ने चेन्नई सुपर किंग्स को उसके घर पर 6 विकेट से हरा दिया है. मंगलवार की रात चेपॉक स्टेडियम में चेन्नई और लखनऊ के बीच एक कांटे की टक्कर वाला मुकाबला खेला गया. जहां, मार्कस स्टोइनिस ने कमाल की शतकीय पारी खेलकर अपनी टीम को एक अहम जीत दिलाई. इस जीत के साथ ही लखनऊ अब प्वॉइंट्स टेबल में चौथे नंबर पर पहुंच गई है. चेन्नई सुपर किंग्स के दिए 211 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम ने 3 गेंद शेष रहते हुए मुकाबला 6 विकेट से जीत लिया. लखनऊ की शुरुआत अच्छी नहीं रही थी, क्योंकि क्विंटन डी कॉक बिना

खाता खोले ही आउट हो गए थे. वहीं पावर प्ले में दूसार विकेट केएल राहुल के रूप में गिरा, जो 14 गेंदों पर 16 रन बनाकर पवेलियन लौट गए. इसके बाद देवदत्त पडिक्कल 13(19), निकोलस पूरन 34(15) पर आउट हुए. लखनऊ की इस जीत का पूरा क्रेडिट ऑलराउंडर खिलाड़ी मार्कस स्टोइनिस को जाता है, जिन्होंने कमाल की शतकीय पारी खेलकर अपनी टीम को जीत दिलाई. मार्कस ने 63 गेंदों पर 124 रन की पारी खेली, जिसमें उन्होंने 13 चौके और 6 छक्के लगाए. चेन्नई सुपर किंग्स की पारी की बात करें, तो टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी चेन्नई सुपर किंग्स ने 20 ओवरों में 210/4 का स्कोर बनाया था. चेन्नई को अच्छी शुरुआत नहीं मिल पाई थी, क्योंकि पावर प्ले में ही 2 विकेट गिर गए. पहले अजिंक्य रहाणे 1(3) और डेरिल मिचेल 11(10) के स्कोर पर चलते बने. फिर नंबर-4 पर बल्लेबाजी के लिए आए रविंद्र जडेजा उम्मीद पर खरे नहीं उतर पाए और 19 गेंदों पर 16 रन बनाकर आउट हो गए. चेन्नई के लिए ऋतुराज गायकवाड़ और शिवम दुबे ने मिलकर शतकीय साझेदारी कर टीम को बड़े स्कोर तक पहुंचाने में अहम किरदार निभाया. जहां, शिवम 27 गेंदों पर 3 चौके और 7 छक्के जड़कर 66 रन बनाकर आउट हुए. महेंद्र सिंह धोनी आखिर में आए और उन्होंने सिर्फ 1 गेंद खेली, जिसे चौके के लिए बाउंड्री पार भेजा. चेन्नई के कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ ने कमाल का शतक लगाया था. वह 60 गेंदों पर 108 रन बनाकर नाबाद लौटे. लेकिन, अंत में गायकवाड़ का शतक बेकार गया, क्योंकि चेन्नई मैच हार गई.

ओस ने हमारे स्पिनरों को मैच से दूर कर दिया : ऋतुराज

चेन्नई(एजेंसी)। आईपीएल 2024 के 39वें मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) ने चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) को 6 विकेट से हराया। इस हार के बाद सीएसके कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ ने हार के लिए ओस को जिम्मेदार ठहराया। ऋतुराज गायकवाड़ ने नाबाद 108 रन बनाए और शिवम दुबे ने 27 गेंदों में तीन चौकों और सात छक्कों की मदद से 66 रनों की तूफानी पारी खेली, जिससे सीएसके ने कुल 210/4 का स्कोर बनाया। लेकिन गायकवाड़ और दुबे की पारी बेकार गई, क्योंकि एलएसजी ने चेपॉक में सबसे सफल लक्ष्य का पीछा करते हुए सीएसके को छह विकेट से हरा दिया, जो इस सीजन में घरेलू मैदान पर उनकी पहली हार थी। लखनऊ के लिए जीत के हीरो रहे मार्कस स्टोनिस, जिन्होंने 63 गेंदों में 13 चौकों और छह छक्कों की मदद से नाबाद 124 रन की शानदार पारी खेली और अपनी टीम को जीत दिलाई। गायकवाड़ ने मैच के बाद कहा, यह हार भूलना आसान नहीं होगा, लेकिन अच्छा क्रिकेट देखने को मिला। लखनऊ ने अंत में अच्छा खेल दिखाया और मैच को हमसे दूर ले गए।

विश्व नंबर एक के रूप में 100-सप्ताह के क्लब में शामिल हुई स्वीयाटेक

मैड्रिड(एजेंसी)। दुनिया की नंबर 1 खिलाड़ी इगा स्वीयाटेक हाल ही में डब्ल्यूटीए रैंकिंग के शीर्ष पर 100 सप्ताह बिताने वाली नौवीं खिलाड़ी बनने की उपलब्धि पर पहुंची हैं। इस उपलब्धि पर विचार करते हुए,स्वीयाटेक ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि इस मील के पत्थर को समझना कठिन है क्योंकि यह बहुत तेजी से हुआ है। डब्ल्यूटीए रैंकिंग के शिखर पर 100 सप्ताह बिताने वाले नौ खिलाड़ियों के चुनिंदा समूह में स्वीयाटेक 22 साल 326 दिन की उम्र में यह उपलब्धि हासिल करने वाली मार्टिना हिंगिस, मोनिका सेलेस, स्टेफनी ग्राफ और क्रिस एवर्ट के बाद पांचवीं सबसे कम उम्र की खिलाड़ी हैं। स्वीयाटेक ने 100 क्लब में शामिल होने के बारे में कहा,

ईमानदारी से कहूं तो मेरे लिए इसे समझ पाना कठिन है क्योंकि यह बहुत तेजी से हुआ। मैंने कभी उस पद पर रहने की उम्मीद नहीं की थी। स्वीयाटेक ने मंगलवार को मैड्रिड ओपन प्री-टूर्नामेंट प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, वास्तव में, खेल में इतने लंबे समय तक शीर्ष पर रहना कुछ ऐसी बात है जो मुझे वास्तव में गौरवान्वित करती है। मुझे लगता है कि हमने कभी-कभी कुछ कठिन निर्णय लिए हैं। मेरे पास अच्छे लोग हैं जो मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं और मेरी मदद कर रहे हैं, इसलिए निश्चित रूप से मैं यहां नहीं होती अगर मैं इसे स्वयं करती और मैं वास्तव में आभारी हूं कि सब कुछ ऐसा हुआ। चार बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन ने पहली बार अप्रैल 2022 में शीर्ष स्थान हासिल किया था जब एश्ले बार्टी ने टेनिस से संन्यास ले लिया था और तब से शिखर पर बनी हुई है, पिछले सीज़न में आठ सप्ताह की अवधि को छोड़कर जब आर्यना सबालेंका ने उनकी जगह ली थी।

रिलायंस जियो ने बनाया नया रिकॉर्ड

इस मामले में बना दुनिया का नंबर एक ऑपरेटर

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय दूरसंचार क्षेत्र में अपनी धाक जमाने के बाद रिलायंस जियो ने डेटा खपत के मामले में भी एक नया वैश्विक रिकॉर्ड कायम किया है, डेटा ट्रैफिक के मामले में वह नंबर एक सेवा प्रदाता बन गई है। टेलीकॉम कंपनियों के डेटा ट्रैफिक, ग्राहक आधार पर नजर रखने वाली फर्म टीएफिशियंट की रिपोर्ट के अनुसार पिछली तिमाही में रिलायंस जियो के नेटवर्क पर कुल डेटा ट्रैफिक 40.9 एक्साबाइट रहा। डेटा खपत का यह स्तर तय करते हुए इस भारतीय दूरसंचार सेवा ऑपरेटर ने चाइना मोबाइल को पहले स्थान से विस्थापित कर दिया है। चीन की कंपनी अब दूसरे पायदान पर खिसक गयी है। चाइना मोबाइल के नेटवर्क पर आलोच्य अवधि में डेटा खपत 40 एक्साबाइट से भी कम रही। चीन की एक और कंपनी चाइना टेलीकॉम डेटा खपत के मामले में तीसरे नंबर पर, तो भारत की एयरटेल चौथे नंबर पर रही। रिलायस जियो के एक अधिकारी ने कहा, 5जी सेवाओं के शुरु होने के बाद, रिलायंस जियो के डेटा खपत में पिछले वर्ष के मुकाबले 35.2 फीसदी का उछाल देखने को मिला। इस उछाल की मुख्य वजह है जियो का ट्रू 5जी नेटवर्क और जियो एयर फाइबर का विस्तार। रिलायंस जियो के तिमाही नतीजों के मुताबिक जियो ट्रू 5जी नेटवर्क पर 10 करोड़ 80 लाख ग्राहक जुड़ चुके हैं और जियो के कुल डेटा ट्रैफिक का करीब 28 फीसदी हिस्सा अब 5जी नेटवर्क से आ रहा है। दूसरी तरफ जियो एयर फाइबर ने भी देश भर के 5,900 शहरों में अपनी सेवाएं शुरू कर दी हैं। सोमवार को जारी तिमाही नतीजों में कंपनी ने जो आंकड़े मुहैया कराए हैं उनके मुताबिक जियो नेटवर्क पर प्रति ग्राहक मासिक डेटा खपत बढ़कर 28.7 जीबी हो गई है, जो तीन साल पहले केवल 13.3 जीबी थी। गौरतलब है कि 2018 में भारत में एक तिमाही का कुल मोबाइल डेटा ट्रैफिक मात्र 4.5 एक्साबाइट था।

दक्षिण एशियाई ट्रायथलॉन चैंपियनशिप में भारत की कमान संभालेंगे प्रज्ञा मोहन, मुरलीधरन सिनिमोल

नई दिल्ली(एजेंसी)। प्रज्ञा मोहन और आदर्श मुरलीधरन सिनिमोल 27 अप्रैल को नेपाल के पोखरा में एशिया ट्रायथलॉन कप के साथ आयोजित होने वाली 2024 दक्षिण एशियाई ट्रायथलॉन चैंपियनशिप में एक मजबूत भारतीय चुनौती की अगुवाई करेंगे। प्रतियोगिता एक स्प्रिंट दौड़ है जिसमें 750 मीटर तैराकी, 20 किमी साइकिल और 5 किमी दौड़ शामिल है। भारत ने पिछले संस्करण में पोडियम स्थान हासिल किया था, जिसमें देश की सबसे प्रसिद्ध महिला ट्रायथलीट प्रज्ञा ने अपना लगातार तीसरा दक्षिण एशियाई खिताब जीता था, जबकि महिलाओं की समग्र श्रेणी में नौवां स्थान भी हासिल किया था। महाराष्ट्र की संजना जोशी और मानसी मोहिते की जोड़ी, जिन्होंने पिछले साल गुजरात की प्रज्ञा के बाद क्रमश: रजत और कांस्य पदक जीता था, महिला एलीट क्षेत्र में 13 भारतीय एथलीटों का हिस्सा हैं। सर्विसेज के मुरलीधरन सिनिमोल, जो पिछले साल तीसरे स्थान पर रहे थे, 2022 में विजेता थे, और पुरुषों के एलीट क्षेत्र में भारत के प्रभारी थे, जिसमें तेलहेइबा सोरम और क्षेत्रिमायुम कबिदश सिंह की होनहार मणिपुर जोड़ी शामिल है।

रियलमी ने नार्ज़ो श्रृंखला का विस्तार करते हुए केवल 10,999 रुपये में सेगमेंट का सबसे तेज स्मार्टफोन, रियलमी नार्ज़ो 70 सीरीज़ 5जी पेश किया

नई दिल्ली। सबसे विश्वसनीय स्मार्टफोन सेवा प्रदाता, रियलमी ने आज रियलमी नार्ज़ो श्रृंखला में रियलमी नार्ज़ो 70 सीरीज़ 5जी का लॉन्च किया। इस सीरीज़ में दो अत्याधुनिक स्मार्टफोन: रियलमी नार्ज़ो 70एक्स 5जी और रियलमी नार्ज़ो 70 5जी पेश किए गए हैं। रियलमी नार्ज़ो स्टाईलिश स्मार्टफ़ोंस की सीरीज़ है, जो यूज़र्स को विस्तृत अनुभव प्रदान करती है। भारत में स्मार्टफोन टेक्नोलॉजी के भविष्य का प्रतिनिधित्व करने वाली रियलमी नार्ज़ो सीरीज़ का उपयोग करने वाले यूज़र्स की संख्या 16 मिलियन से ज्यादा है। इन डिवाईसेज़ को आधुनिक टेक्नोलॉजी और प्रीमियम फीचर्स के साथ डिज़ाईन किया गया है, ताकि यूज़र्स अपने अद्वितीय स्टाईल का प्रदर्शन करते हुए ट्रेंड में सबसे आगे रह सकें। ग्राहकों को शॉपिंग का बेहतर अनुभव प्रदान करते हुए रियलमी नार्ज़ो सीरीज़ उपलब्ध कराने के लिए रियलमी

और अमेज़न ने गठबंधन किया है। इस गठबंधन के अंतर्गत यूज़र्स को अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी प्रदान करने की प्रतिबद्धता के साथ रियलमी नार्ज़ो सीरीज़ केवल अमेज़न.इन पर मिलेगी। रियलमी की ड्युअल-प्लेटफॉर्म रणनीति के अंतर्गत रियलमी ने अपना पहला ऑनलाईन स्टोर मार्च, 2023 में अमेज़न पर शुरू किया था। इस लॉन्च के बारे में रियलमी के प्रवक्ता ने कहा, ''हमें रियलमी नार्ज़ो 70 सीरीज़ 5जी के लॉन्च की घोषणा करने की खुशी है। यह यूज़र्स को अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी एवं प्रीमियम फीचर्स प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यह सीरीज़ स्मार्टफ़ोन के भविष्य का प्रतिनिधित्व करती है, जो यूज़र्स को लगातार विकसित होते हुए डिजिटल परिदृश्य में संपूर्ण अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाईन की गई है। अपनी आधुनिक और शक्तिशाली विशेषताओं के साथ रियलमी नार्ज़ो 70 सीरीज़ 5जी स्मार्टफ़ोन के अनुभव को बदल देगी। भारत में 16 मिलियन से ज्यादा यूज़र्स तक पहुँचकर अपने कदमों का विस्तार करते हुए हमें विश्वास है कि रियलमी नार्ज़ो 70 सीरीज़ 5जी स्मार्टफ़ोन उद्योग में नए मानक स्थापित कर देगी। रियलमी नार्ज़ो 70 सीरीज़ 5जी के साथ कनेक्टिविटी और परफॉर्मेंस का नया युग शुरू करने की तैयारी कर लीजिए।'' रियलमी नार्ज़ो 70एक्स 5जी में 5000एमएएच की शक्तिशाली बैटरी है।

सैमसंग इंडिया ने 'सैमसंग इनोवेशन कैंपस' का दूसरा सीजन लॉन्च किया

नई दिल्ली। भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने अपने राष्ट्रीय कौशल प्रोग्राम - सैमसंग इनोवेशन कैंपस - के दूसरे सीजन को लॉन्च किया है। इस प्रोग्राम का उद्देश्य एआई, आईओटी, बिग डेटा और कोडिंग एंड प्रोग्रामिंग जैसे भविष्य के तकनीकी डोमेन में युवाओं को कुशल बनाने के लिए तैयार किया गया है। सैमसंग इनोवेशन कैंपस का लक्ष्य 18-25 वर्ष की आयु के युवाओं को भविष्य की तकनीकों में कुशल बनाना और उनकी रोजगार क्षमता को बेहतर करना है। यह प्रोग्राम भारत की विकास गाथा में एक मजबूत भागीदार और योगदान की दिशा में सैमसंग की प्रतिबद्धता को सामने लाता है है। इसे युवाओं के लिए सही अवसर पैदा करने के लिए स्किल इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी भारत सरकार की पहल का समर्थन करने के लिए तैयार किया गया है। इस सप्ताह की शुरुआत में सैमसंग और इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर स्किल्स काउंसिल ऑफ इंडिया (ईएसएससीआई) के बीच भारत भर में 3,500 छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस वर्ष यह प्रोग्राम केवल कौशल प्रशिक्षण तक सीमित नहीं होगा, बल्कि उससे आगे बढ़कर छात्रों के लिए और अधिक रोमांचक अवसरों को सामने लेकर आएगा। प्रत्येक डोमेन के राष्ट्रीय टॉपर्स को 1 लाख रुपये का नकद पुरस्कार मिलेगा और साथ ही दिल्ली/एनसीआर में सैमसंग केंद्रों का दौरा करने का अवसर भी मिलेगा। इन केंद्रों का दौरा करने से छात्रों को सैमसंग की नेतृत्व टीम के साथ बातचीत करने और उनसे सीखने व समझने का अवसर मिलेगा। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के टॉपर्स को सैमसंग गैलेक्सी बड्स और सैमसंग गैलेक्सी स्मार्टवॉच जैसे रोमांचक सैमसंग उत्पाद भी मिलेंगे।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शुक्रवार 26 अप्रैल 2024

हथियारबंद लोगों ने शराब दुकान से लूटा 30 लाख रुपए

कोरबा-पाली-रायपुर (आरएनएस)। जिले के सरहद क्षेत्र पाली थाना अंतर्गत बुधवार की देर रात हथियार के दम पर शराब दुकान में 30 लाख रुपए की लूटपाट हो गई। पुलिस ने अपराध दर्ज कर मामला जांच में लिया है। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर जिले में पुलिस की चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था और जगह-जगह पर की जाने वाली जांच और चेकिंग के बीच अज्ञात लुटेरों ने इस दुस्साहस को अंजाम दिया है।

संक्षिप्त समाचार

हर्षित जैन गंगवाल ने आईआईटी जेईई मेंस में प्राप्त किये 99 परसेंटाइल स्कोर

रायपुर (विश्व परिवार)। गुढ़ियारी निवासी श्री प्रदीप जैन गंगवाल के सुपुत्र हर्षित जैन गंगवाल ने आईआईटी जेईई मेंस में 99 परसेंटाइल स्कोर प्राप्त किया। हर्षित ने अपनी इस सफलता का श्रेय रायपुर शहर के एलन कोचिंग सेंटर के अध्यापक गण, अपने परिवारजन के प्रोत्साहन व अपनी कड़ी मेहनत व सेल्फ स्टडी को दिया। हर्षित की इस अद्भुत सफलता पर उन्हें चारों ओर से बधाई एवं शुभकामना संदेश प्राप्त हुए, दैनिक विश्व परिवार हर्षित की इस सफलता पर बधाई देते हुए उनके उज्जल भविष्य की मंगल कामना करता है।

ज़िला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह स्वयं पहुंचे मतदाताओं के घर, दिया मतदाता पर्ची, किया मतदान का आग्रह

रायपुर (विश्व परिवार)। आज रायपुर नगर पश्चिम विधानसभा में स्थित माधव राव सप्रे वार्ड के निवासियों के घर जाकर कलेक्टर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने स्वयं श्री रघु गोंड एवं आस पास के अन्य मतदाताओं के घरों में जाकर भी मतदाताओं के हाथों में मतदाता पर्ची देकर नागरिकों को मतदान करने की अपील किया। उल्लेखनीय है कि कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव कुमार सिंह के निर्देश पर घर-घर मतदाता पर्ची का वितरण किया जा रहा है। इस दौरान रायपुर नगर निगम आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा, एसडीएम श्री नंदकुमार चौबे उपस्थित थे।

साधराम हत्याकांड की जांच करेगी एनआईए

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ सरकार ने केंद्रीय गृह सचिव को कबीरधाम ज़िले में हुए साधराम हत्याकांड की जांच एनआईए से कराने के लिए औपचारिक मगर अनिवार्य आग्रह पत्र भेज दिया है। यह पत्र राज्य सरकार ने 24 अप्रैल को भेजा है। ज्ञात हो कि कबीरधाम जिले के लालपुर कला में 21 जनवरी की सुबह क़रीब साढ़े सात बजे साधराम यादव का शव बरामद हुआ था।

मतदाता जागरूकता के लिए 'मे-फेयर' लेक रिसॉर्ट का अनुकरणीय पहल

प्रबंधन ने इस आशय का पत्र जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर को सौंपा

कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने कहा- मतदाता जागरुकता के लिए अनुकरणीय पहल

- अंगुली की स्याही दिखाने पर 30 % छूट में मिलेगा भोजन
- 7 मई को कीजिए वोट, बचाइए 30 प्रतिशत नोट
- मतदान तिथि से लेकर 12 मई तक मिलेगी यह स्पेशल छूट
- 3 बुफे ऑर्डर में चौथे व्यक्ति को निःशुल्क भोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव कुमार सिंह के मार्गदर्शन में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में सहभागिता प्रदान करते हुए प्रतिष्ठित होटल एवं रिसॉर्ट ग्रुप 'मे-फेयर' लेक रिसॉर्ट ने अभिनव पहल कर 07 मई को मतदान करने वाले हाथ की स्याही दिखाने वाले मतदाताओं के लिए स्पेशल डिस्काउंट ऑफर की घोषणा की है। इसके तहत 07 मई से 12 मई 2024 तक सभी मतदाताओं को कार्ट ऑर्डर व बुफे पर स्पेशल डिस्काउंट दिया जाएगा। कलेक्टर डॉ. सिंह ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे अन्य संस्थानों के लिए भी अनुकरणीय बताया है।

7 मई को कीजिए वोट, बचाइए 30 प्रतिशत नोट : मे-फेयर लेक रिसॉर्ट के रिलेशनशिप ऑफिसर श्री नीलेश ने आज कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह से मुलाकात कर अपने इस ऑफर से अवगत कराया। मे-फेयर लेक रिसॉर्ट द्वारा मतदान तिथि 07 मई को वोट देने वाले मतदाताओं को भोजन सूची (कार्ट) पर ऑर्डर करने पर 30 प्रतिशत का डिस्काउंट दिया जाएगा। इसके अलावा तीन व्यक्तियों के बुफे पर एक अतिरिक्त व्यक्ति का बुफे निःशुल्क होगा। ताकि लोग अधिक से अधिक वोट करने के लिए प्रेरित हो। मे-फेयर प्रबंधन के अनुसार भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ करने हेतु मतदाता जागरूकता कार्यक्रम में सहभागिता हेतु यह पहल की गई है।श्री निलेश ने कहा कि 7 मई को कीजिए वोट, बचाइए 30 प्रतिशत नोट के टैग लाईन से हम मतदाताओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से यह प्स्कीम लागू कर रहे हैं। यह ऑफर 07 मई से 12 मई 2024 तक उपलब्ध रहेगी। प्रबंधन द्वारा इस आशय का पत्र भी कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी को सौंपा है। इस दौरान नगर निगम कमिश्नर श्री अबिनाश मिश्रा, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विश्वदीप उपस्थित थे।

रायपुर जिला प्रशासन का मतदाता जागरूकता कार्यक्रम, स्वीप संध्या का आयोजन आज शाम मरीन ड्राईव में

मॉडल अधीर-जया भगवानानी के साथ सीनियर सिटीजन, कपल्स, युवा वोटर करेंगे रैम्प वॉक

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव कुमार सिंह के मार्गदर्शन में जिले के मतदाताओं को मतदान हेतु प्रेरित करने संचालित किए जा रहे जागरूकता कार्यक्रमों की श्रृंखला में शुक्रवार 26 अप्रैल की शाम भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम स्वीप संध्या का आयोजन किया जा रहा है। प्रख्यात मॉडल अधीर भगवानानी और जया भगवानानी का रैम्प वॉक इस अवसर पर होगा, यही नहीं अविवाहित, विवाहित, वरिष्ठ मतदाता, ट्रांसजेंडर्स, दिव्यांग मतदाताओं के साथ ही साथ तीन पीढ़ियों के सदस्य रैम्प वॉक कर सभी को मतदान का संदेश देंगे। स्वीप संध्या की शुरूआत मरीन ड्राईव तेलीबांधा में शाम 06:30 बजे होगी।

युवा वोटर्स, अविवाहित, नववधू, तीन पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व करने वाले दादी, माँ, बेटी और दादा-दादी एवं पोता, 60 वर्ष से अधिक आयु वाले पुरूष व महिला मतदाता, ट्रांसजेंडर्स, दिव्यांग इस स्वीप संध्या में के रैम्प वॉक के प्रतिभागी होंगे। इसके लिए निर्धारित श्रेणियों के अंतर्गत 18 से 25 वर्ष के अविवाहित मतदाता, 01 वर्ष की नवविवाहिता मतदाता के साथ महिला पुरूष मतदाता वर्ग में पृथक-पृथक एक साथ तीन पीढ़ियां व ट्रांसजेंडर्स एवं दिव्यांग मतदाता रैम्प वॉक कर मतदान का संदेश देंगे। स्वीप संध्या में भाग ले रहें प्रतिभागियों को शाम 05 बजे तक अनिवार्य रूप से कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने के लिए कहा गया है।

रायपुर जिला प्रशासन के इस भव्य सांस्कृतिक आयोजन में कोई भी प्रतिभागी पंजीयन करा सकते है। इसके लिए जिला प्रशासन, नगर निगम, रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल्स जैसे- फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम में स्वीप संध्या संबंधी क्रिएटिव में प्रदर्शित क्यू-आर कोड स्कैन कर अपना निःशुल्क पंजीयन करा सकते है। विशेष प्रदर्शन कर मतदान जागरूकता का संदेश देने वाले प्रतिभागियों को जिला प्रशासन रायपुर द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। स्वीप संध्या से संबंधित अधिक जानकारी के लिए महिला बाल विकास विभाग की परियोजना अधिकारी रितु परिहार दूरभाष क्रमांक 62667-94466 एवं अनुपमा तिवारी 98271-87140 से संपर्क कर सकते है।

पिपरौद में भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में वृहद चुनावी सभा को संबोधित करेंगे मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

- भाजपा के शीर्ष नेता ने कार्यक्रम स्थल पहुंचकर तैयारियों को लेकर विचार विमर्श किया

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय शुक्रवार दोपहर 2 हो बजे गोबरा नवापारा क्षेत्र के ग्राम पिपरौद आयेंगे। मुख्यमंत्री साय यहां 8। रायपुर लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल के पक्ष में वृहद चुनावी सभा को संबोधित 8, करने आयेंगे। कार्यक्रम पिपरौद के मिडिल स्कूल परिसर में आयोजित है। मुख्यमंत्री की सभा को देखते हुए अभनपुर विधायक इंद्रकुमार साहू, रायपुर लोकसभा के चुनाव प्रभारी ष्ट्र, संदीप शर्मा, सह प्रभारी अशोक बजाज सहित गोबरा नवापारा व अभनपुर भाजपा के शीर्ष नेता आज कार्यक्रम स्थल पहुंचे और तैयारियों को लेकर विचार-विमर्श किया। इस दौरान कार्यक्रम में उमड़ने वाली लोगों की भारी भीड़ की बैठक व्यवस्था व भीड़ को तेज गर्मी से बचाने, मुख्यमंत्री की सुरक्षा व्यवस्था आदि पर विचार-विमर्श करते हुए लोगों को जिम्मेदारियां दी गई। भाजपा नेताओं का कहना है कि मुख्यमंत्री की सभा को सहज, सुरक्षित, व्यापक और सफल बनाने के लिए प्रत्येक पदाधिकारी और कार्यकर्ता संकल्पित है। इस दौरान जिला मंत्री परदेसी राम साहू, जिला पंचायत सदस्य खेमराज कोशले, जनपद सदस्य सूरज साहू, कमलनारायण साहू, मुकेश ढीढी, मंडल अध्यक्ष उमेश यादव, अनिल अग्रवाल, शोभाराम साहू, टीकाराम साहू, सुरेश वर्मा, किशोर देवांगन, चितलाल साहू, योगेश साहू, बसंत कोशले संजय साहू इम्मू सोलंकी सहित आदि नेता उपस्थित थे।

बी.टेक. (खाद्य प्रौद्योगिकी) 4 वर्षीय पाठ्यक्रम- एक नया अवसर

रायपुर (विश्व परिवार)। विगत कुछ वर्षो में खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी से संबंधित उपक्रम एक बडे एवं विस्तृत रूप में सामने आये हैं। सर्वेक्षण के द्वारा यह मालूम किया गया है कि प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने से एवं बदलते समय के अनुसार व्यस्त जिन्दगी में शहरी लोगो की जीवन शैली में प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों की मांग में लगातार बढोतरी हो रही है। इस प्रकार की स्थिति से हमारा प्रदेश भी अछुता नही है। छत्तीसगढ प्रदेश में विभिन्न फसलों की, सब्जियों की, फलों की एवं लघु अनाज एवं वनोपज की प्रचुरता को देखते हुए इस प्रदेश में भी खाद्य प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रसंस्करण की तकनिकों का उपयोग करते हुए अनेक प्रकार के डब्बा बंद, प्रसंस्कृत उत्पाद, इंस्टैन्ट/रेडी टू इट प्रकार के खाद्य व्यंजनों का निर्माण आसानी से किया जा सकता हैं। समय की कमी से लोग आज कल डब्बा बंद, प्रसंस्कृत उत्पाद, इंस्टैन्ट/रेडी टू इट प्रकार के खाद्य व्यंजनों को वरीयता दे रहें हैं। फसल और फल सब्जियों का उत्पादन लगातार बढता जा रहा हैं एवं उनकी खपत उस मौसम में न होने के कारण अधिकांश समय कृषकों को हानी की संभावना होती हैं। ऐसी स्थिति से बचने के लिये इन फसलों, फल, सब्जियों में खाद्य प्रौद्योगिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण की तकनिकों का उपयोग करके इनसे मुल्यवर्धित उत्पादों का निर्माण किया जा सकता हैं जिसे की गैर मौसमी समयकाल में आसानी से उपयोग किया जा सकता है एवं ऐसा करने से कृषक समुदाय को आर्थिक लाभ आवश्यक रूप से प्राप्त होगा। इन फसलों से मुल्यवर्धित पदार्थ बनाने से प्रदेश के किसानो, युवाओं, महिला स्व सहायता समुहों को रोजगार प्राप्त करने में भी आसानी होगी। इसका आशय यह है कि खाद्य प्रौद्योगिकी आधारित प्रसंस्करण के कार्य भविष्य के लिये अत्यंत उपयोगी हैं एवं इस क्षेत्र के बहुमुखी विकास हेतु मानव संसाधन का विकास करना अति आवश्यक हैं। अन्य प्रदेशों ने इस विषय की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए अपने-अपने प्रदेशों जैसे महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटका, तमिलनाडु, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश आदि प्रदेशों में या तो अनुसंधान के केन्द्र प्रारंभ किये गये या बी. टेक. (खाद्य प्रौद्योगिकी) के शैक्षणिक संस्थान प्रारंभ किये गये।

छत्तीसगढ़ प्रदेश में भी खाद्य प्रौद्योगिकी के महत्व को स्वीकार करते हुए प्रदेश शासन ने इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, रायपुर में वर्ष 2020 से प्रारंभ किया हैं एवं इस 4 वर्षीय पाठयक्रम के पश्चात बी. टेक.(फुड टेक्नालॉजी) की उपाधि प्रदान की जावेगी। इसका सिलेबस भारतीय भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई. सी. ए. आर.) नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित हैं। इस बी. टेक.(फुड टेक्नालाजी) कोर्स की 36 सीटों में प्रवेश हेतु विद्यार्थी को गणित, भौतिक, रसायन विषय के साथ 12 वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य हैं तथा व्यापम छत्तीसगढ द्वारा आयोजित पी.ई.टी. की परीक्षा में प्रावीणता के आधार पर प्रवेश दिया जाता हैं। वर्ष 2024-25 में इस पाठयक्रम में प्रवेश का विज्ञापन शीघ्र ही जारी किया जावेगा एवं अधिक जानकारी हेतु www.igkv.ac.in का भ्रमण करें। प्रवेश संबंधित जानकारी हेतु 9425525249 पर व्हाट्सएप कर सकते हैं। इस 4 वर्षीय पाठयक्रम के दौरान विद्यार्थीयों को खाद्य अभियांत्रिकी, खाद्य प्रौद्योगिकी, खाद्य रसायन, खाद्य माइक्रोबायोलाजी, खाद्य व्यापार प्रबंधन, खाद्य पदार्थो की गुणवत्ता जॉच से संबंधित विषयों को महत्व के अनुसार शिक्षण एवं प्रायोगिक कार्य हेतु अलग-अलग घण्टे निर्धारित किये गये हैं।

'मोक्ष के प्रेमी' (राग से वैराग्य की ओर) नाटिका का भव्य मंचन सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। मोक्ष के प्रेमी हमने कर्मों से लड़ते देखे इस वाक्य को चरितार्थ करता उपसर्ग विजयी सुकुमाल महा मुनिराज का जीवन और उनके जीवन की कथा को जीवंत रुप देने के लिए एक भव्य नाटिका की प्रस्तुति वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर के 2623 वे जन्म कल्याणक महोत्सव का पर दिनांक 19 अप्रैल 2024 दिन शुक्रवार को शहर के एम जी रोड़ स्थित जैन दादाबाड़ी रायपुर में श्री दिगम्बर जैन महिला मंडल रायपुर द्वारा प्रस्तुत दी गई।

इस नाटिका के माध्यम से उपसर्ग विजयी सुकुमाल महा मुनिराज के संपूर्ण जीवन एवं पूर्व भवो का विस्तार यहां देखने को मिला, यहां देखने को मिला कि जिन महा मुनिराज को गृहस्थ अवस्था में सरसो का दाना भी चुभता था पर जब वे वैराग्य धारण कर मुनि अवस्था को प्राप्त हुए तो कठिन तपस-चरण कर अपनी आत्मा में इस कदर लीन हुए की उन्हें जब गीदड़ आदि उन्हें नोचकर खाते रहे तो भी वे अपनी तपस्या में अडिग रहे।

इस नाटिका की अद्भुत प्रस्तुति की सराहना सभी उपस्थित जन समुदाय ने की।

इस नाटिका की सफलतम संयोजना का सौभाग्य श्रीमती श्रद्धा योगेंद्र जैन (गुरुकृपा) तथा सह संयोजन कर्ता श्रीमती लवली जैन, श्रीमती रश्मि जैन, श्रीमती प्रियंका जैन, श्रीमती संध्या जैन, श्रीमती हिना जैन को प्राप्त हुआ।

इस नाटिका में भाग लेकर विभिन्न पात्रों का किरदार निभाने का सौभाग्य श्रीमती श्रद्धा योगेंद्र जैन, श्रीमती सुनिता जैन, श्रीमती शालिनी जैन, श्रीमती अमिता संघी, श्रीमती काजल जैन, श्रीमती रोहिता जैन, श्रीमती संध्या दिलीप जैन, श्रीमती अमिता जैन,श्रीमती चांदनी जैन, श्रीमती चंचल जैन, खुशबू रानी जैन,डॉली जैन,पारुल जैन,प्रतिभा जैन, प्रियंका जैन,ममता जैन,रश्मि जैन, अतिशया जैन, माही जैन, पीहू जैन, अपेक्षा संघी,समृद्धि जैन, निर्वि जैन,अनुष्का जैन, पार्थ जैन,श्रुत जैन,अरहम जैन,सेजल जैन,अक्षत जैन,शुभी जैन,मुस्कान जैन आदि को प्राप्त हुआ।

आपदा प्रबंधन की मिसाल बनी बिजली भंडार की आगजनी...

उपलब्ध संसाधनों के बेहतर इस्तेमाल व समन्वय से शीघ्र रोकथाम, जनहानि, जनसंपत्ति हानि का बचाव, (माननीय मुख्यमंत्री एवं अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज की तस्वीरों का उपयोग अनुशंसित है)।

एक कहावत है 'जान है तो जहान है' लेकिन यह समय की शिला पर उकेरा गया सबसे बड़ा सच भी है। दुनियाभर में जितने भी कर्म किये जाते हैं, उनमें सबसे बड़ा काम वही माना जाता है, जो किसी की जान बचाने के लिए किया गया हो।

05 अप्रैल 2024 को छत्तीसगढ़ की राजधानी, रायपुर के आसमान पर जो काले धुंये का गुबार छाया था, वह सारे शहर में दहशत फैला रहा था कि पता नहीं कितनों की जान और माल पर कितना खतरा मंडरा रहा है?

आग के बारे में कहा जाता है कि वह पानी से बुझती है लेकिन तेल की आग पर पानी भी बेअसर होता है, तो सवाल उठता है कि ऐसी आग कैसे बुझेगी? अब इस आग की विकरालता के साथ जुड़ी अन्य चुनौतियों पर भी गौर करना जरूरी है।

घनी बस्ती व ऑयल से भरे डिब्बा बन्द : एक ओर 132 के.वी. क्षमता का विद्युत उपकेंद्र और दूसरी ओर घनी बस्ती। उस घनी बस्ती और भभकती ज्वाला के बीच ऑयल से भरे हुए डिब्बाबंद ड्रम। एक छोटी सी बोतल में भरा पेट्रोल कितना विध्वंसक होता है, यह सब को पता है, तो ऑयल भरा हुआ डिब्बाबंद ड्रम कितना कहर ढा सकता है?

दूसरों की जान की परवाह करना ही सबसे बड़ा कर्तव्य : यह सोचकर भी आत्मा कांप उठे। वह पर ऐसा एक नहीं, अनेक ड्रम थे। इन ड्रमों को वहां से हटा देना ही भयानक शक्तिशाली बमों को डिफ्यूज करने जैसा राहतकारी कदम था। थोड़ी ही दूरी पर, खुले मैदान पर पड़े ऑयल भरे ट्रांसफार्मर बमों की तरह फट रहे थे और उससे थोड़ी दूर ऑयल के ड्रमों को हटाने के लिए अपनी जान की बाजी वही लगा सकता है, जो दूसरों की जान की परवाह करता हो और जान बचाने को ही सबसे बड़ा कर्तव्य समझता हो।

अधिकारियों के फर्ज तो औरो के लिए प्रेरणा : ऐसे कुछ वीडियोज वायरल हुए हैं, जिसमें एक महिला और कुछ पुरुष अधिकारी स्वयं ऑयल भरे ड्रमों को धकेलकर आग की जद से दूर ले जाते दिख रहे हैं। जैसे कि युद्ध जैसी बमबारी और धमाकों के बीच भी उन्हें सिर्फ एक ही आवाज सुनाई दे रही हो, बचाव, बचाव, बचाव। इनके साहस और जज्बे को सलाम करने के बजाय जो लोग दूरबीन लेकर लापरवाही ढूंढ रहे हैं, उनसे कुछ कहना निरर्थक है।

श्रेष्ठतम प्रबंधन ही सर्वश्रेष्ठ रास्ता होता : जाहिर है कि ऐसे हालातों के बीच वही व्यक्ति काम कर पाता है, जो यह जानता हो कि प्रिवेंटिव मेन्टेनेन्स की अपनी अहमियत तो है ही, लेकिन जब कोई आपदा आ ही गई हो तो उससे निपटने का हर संभव और श्रेष्ठतम प्रबंधन ही सर्वश्रेष्ठ रास्ता होता है।

न्यूनतम क्षति के साथ संकट से निजात : आपदा प्रबंधन का सबसे बड़ा सिद्धांत है, न्यूनतम क्षति के साथ संकट से निजात। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के क्षेत्रीय भंडार के अग्निकांड में जन हानि न होना और आम जनता की निजी संपत्तियों का लेशमात्र भी नुकसान न होना आपदा प्रबंधन की सबसे बड़ी कसौटी थी। इस कसौटी और चुनौती में खरा उतरना बेहद राहतदायी है। शहर के बड़े हिस्से में विद्युत आपूर्ति करने वाले 132 केवी उपकेंद्र, ऑयल के ड्रम, लगभग 100 ट्रांसफार्मर और अन्य कीमती उपकरण आग की भेंट चढ़ने से बच गए, यह निश्चय ही उपलब्धि है लेकिन इतनी भयानक आग में जनहानि नहीं होना अतुलनीय उपलब्धि है और इसके लिए मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की प्रेरणा, उनके संबल की बहुत बड़ी प्रेरणा ने अपना काम किया।

बेहतर समन्वय से उत्कृष्ट परिणाम : छत्तीसगढ़ पॉवर कंपनियों के अध्यक्ष और छत्तीसगढ़ शासन के ऊर्जा विभाग के सचिव श्री पी.दयानंद की भूमिका भी रेखांकित करने योग्य है। श्री दयानंद ने पहले भी कई बार कहा है कि दुर्घटना न हो, इससे सुखद कुछ हो नहीं सकता लेकिन अगर कुछ अनहोनी घट ही गई हो तो संसाधनों के बेहतर समन्वय और सर्वश्रेष्ठ प्रबंधन का कोई विकल्प नहीं होता। यही सीख 5 अप्रैल को काम आ गई।

-उमेश कुमार मिश्र
(अतिरिक्त महाप्रबंधक-जनसंपर्क, छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज़)

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354